* श्रीसर्वेश्वरो जयति *

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

गोशतकम्

रचयिता--

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री श्रीजी महाराज

प्रकाशक--

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

किशनगढ़, अजमेर (राजस्थान)

गोपाष्टमी

वि० सं० २०६०   श्रीनिम्बार्काब्द ५०९८

पुस्तक प्राप्ति स्थान--

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

प्रथमावृत्ति--

दो हजार

मुद्रक--

श्रीनिम्बार्क - मुद्रणालय

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

न्यौछावर

पन्द्रह रुपये
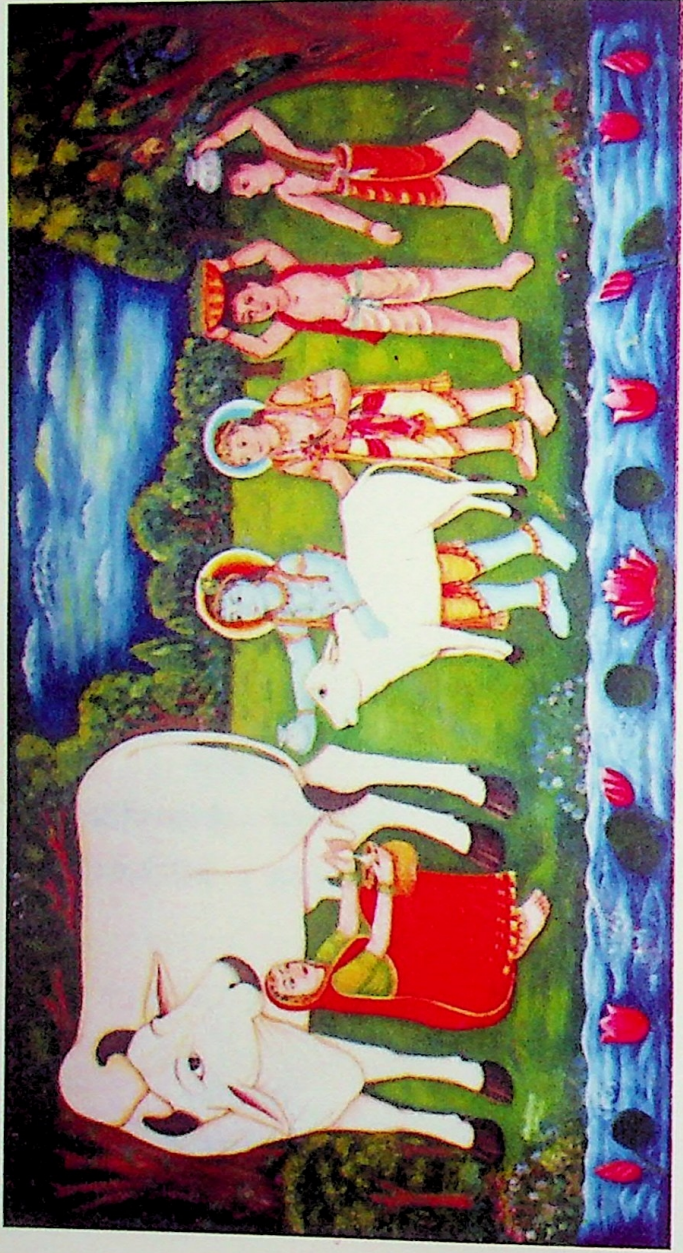
गो-दोहन करती हुई यशोदा मैया
एवं भगवान् श्रीकृष्ण बलराम गोदुग्ध हेतु तत्पर

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *

समर्पणम्

नन्दनन्दन ! गोविन्द ! गोपाल ! माधव ! प्रभो ! ।
सर्वेश्वर ! कृपासिन्धो ! राधिकावल्लभ ! प्रिय ! ॥

वृन्दावनेश ! सर्वज्ञ ! सर्वव्यापक ! केशव ! ।
यमुनाकूलकुञ्जेषु विहारिन् ! वेणुमोहन ! ॥

गोवृन्दाश्रय ! हे कृष्ण ! व्रजेश ! व्रजवल्लभ ! ।
गोवर्धनधर ! श्रीमन् ! गोपिकाहृदयेश्वर ! ॥

कदम्ब-जम्बु-कुञ्जस्थ ! सखीमण्डलमण्डित ! ।
त्वत्पदाब्ज - समुद्गीतं गोशतकं समर्प्यते ॥

समर्पकः-

श्रीराधागोपालकृपाकामः-

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः

सर्वकामदुघा – गोमाता

वेद-पुराण-इतिहास-धर्मशास्त्र-आयुर्वेद आदि सद्ग्रन्थों में गोमाता की दिव्य शक्ति और परमोत्कृष्ट महत्ता का परिवर्णन किया गया है। ऋग्वेद में--**उतः नो धियो गोअग्राः पूषन् विष्णवे वयावः । कर्ता नः स्वस्तिमताः** । एक समय देवराज इन्द्र ने देवसभा में कहा हे सर्वव्यापक ! पोषणकर्ता देव ! हमारे बुद्धिपूर्वक किये जाने वाले कर्म गौ को प्रमुख स्थान देकर नियुक्त कीजिए और हमें कल्याण पथ की ओर प्रेरित करें, जिससे गोमाता की महिमा बढे तथा हम सभी सदा सुखी रह सकें ।

यजुर्वेद में--**आ राष्ट्रे जायतां दोग्ध्री धेनुः** । अर्थात् हे भगवन् ! हमारे राष्ट्र में सर्वत्र प्रशस्त दूध देने वाली गायें अभिवृद्धि को प्राप्त हो ।

अथर्ववेद में--**गावो विश्वस्य मातरः** गाय समस्त विश्व की माता है ।

पुराण में--**नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च । नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः** । अनन्तश्री सम्पदा युक्त उन गोमाताओं को प्रणाम है जो कामधेनु की सन्तति एवं ब्रह्मसुता के रूप में विख्यात हैं तथा सर्वदेवमयी होने से अत्यन्त पावन हैं । अतः उनको बार-बार नमन करते हैं ।

धार्मिकजनों की भावना रहती है--हमारे आगे-आगे गाय हों, पीछे भी गाय हों, दोनों बगल में भी गाय हों तथा हम गौओं के

बीच में ही सदा अवस्थित रहें । **गावो मे अग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः । गावो मे पार्श्वतः सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ।**

महाभारत में--महर्षि वशिष्ठ के आश्रम में अवस्थित नन्दिनी का प्रभाव व उसकी दिव्यशक्ति का जो वर्णन मिलता है वह कितना विलक्षण है । जब महाराज विश्वामित्र नन्दिनी का अपहरण करने लगते हैं तब नन्दिनी ने अपने शरीर से असंख्य सैनिक प्रकट किये थे । उनके द्वारा विश्वामित्र की सैन्य शक्ति का विनाश कर उन्हें पराजित किया था । महर्षि जमदग्नि के आश्रम से गौ का हरण करने पर भगवान् श्रीपरशुरामजी ने अतुलबलशाली कार्तवीर्य अर्जुन का संहार कर गाय को मुक्त किया ।

धर्मशास्त्रों में गोदान की महिमा का अपूर्व वर्णन मिलता है । आयुर्वेद में--गो दुग्ध, दधि, घृत, गोमूत्र एवं गोमय का पृथक्-पृथक् गुणधर्म तथा सम्मिलित पञ्चगव्य, पञ्चामृत का प्रभाव कितने महनीय रूप में प्रतिपादित हैं ।

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिश्च रोचना ।
षडङ्गं परमं पाने दुःस्वप्नाद्यादिवारणम् ॥

गोमाता निष्कपट सेवा भाव से प्रसन्न होने पर सन्तान, धन-वैभव, विद्या, ब्रह्मज्ञान आदि सब कुछ प्रदान करती है ।

नन्दनन्दन भगवान् श्रीकृष्ण ने स्वयं सर्वेश्वर होते हुए भी गोमाता की सेवा और उनका संरक्षण, संवर्धन आदि स्वावतार प्रयोजन का सम्पादन कर अपने गोपाल नाम को ख्यापित किया । गोवर्धन धारण लीला के प्रसङ्ग में देवराज सहित सुरभि देवी ने भूतल पर अवतीर्ण होकर अपनी दुग्धधारा से श्रीहरि का अभिषेक

किया जिससे प्रभु का नाम गोविन्द पड़ा । महाराज दिलीप ने गोसेवा से पुत्ररत्न प्राप्त किया, ऋषि बालक सत्यकाम जाबाल गोसेवा से ब्रह्मज्ञानी हो गये ।

गोमाता के इन्हीं दिव्यभावों को ध्यान में रखकर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री श्रीजी महाराज ने सरल, सुबोध सर्वजन संवेद्य संस्कृत के अनुष्टुप् छन्द में **गोशतकम्** नामक अभिनव काव्य रचना की है । उसको हिन्दी भावार्थ सहित प्रकाशित कराकर धार्मिक जगत् के प्रति महती अनुकम्पा की है । स्वतन्त्र भारत में भी गोहत्या बन्द न होने पर आपश्री के हृदय में कितनी व्यथा है इसका परिज्ञान इस गोशतक के अध्ययन, मनन, अनुशीलन से सहज में हो जायेगा । अपनी ऐतिहासिक नेपाल यात्रा के प्रसङ्ग में विश्व के एकमात्र हिन्दू राष्ट्र नेपाल की राजधानी काठमाण्डू में विश्व हिन्दू महासंघ नेपाल द्वारा समायोजित हिन्दू एकता दिवस समारोह के अवसर पर सभा को सम्बोधित करते हुए आपश्री ने **गोशतकम्** के कुछ पद्यों जिनमें नेपाल राष्ट्र की महिमा के साथ गोरक्षण के बिन्दु अंकित हैं को जब प्रस्तुत किया तब वहाँ उपस्थित जन समुदाय ने जयध्वनि के साथ हार्दिक स्वागत किया गोमहिमा पर आपश्री का सदुपदेशात्मक प्रवचन श्रवण कर नेपाल की जनता मन्त्रमुग्ध हो गयी ।

प्रस्तुत ग्रन्थ में गोमाता के प्रभाव और महत्व का लौकिक-अलौकिक - धार्मिक - आर्थिक, व्यावहारिक - पारमार्थिक आदि

विविध दृष्टिकोण से सर्वाङ्गीण रूप में परिवर्णन हुआ है । यह ग्रन्थ धर्मानुरागी श्रद्धालु गोभक्तों के लिए तो परमोपयोगी होगा ही साथ ही अन्य सर्वसाधारण जनसमूह के लिए भी प्रेरणादायक होगा । अतः पूज्य आचार्यचरणों का कृपाप्रसाद समझ कर ग्रन्थ के पठन-मनन से श्रद्धालु जन लाभान्वित हों यही श्रीसर्वेश्वर प्रभु से अभ्यर्थना करता हूँ ।

आचार्यश्रीचरणरजरेणुः-

वासुदेवशरण उपाध्याय - निम्बार्कभूषण

व्या० सा० वेदान्ताचार्य

प्राचार्य-

श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय

निम्बार्कतीर्थ - सलेमाबाद

जि० अजमेर (राजस्थान)

शुभमिति

भाद्रकृष्ण १४ भौमवार

संवत् २०६०

दि. २६/८/२००३

गोमाता विश्व सम्पदा है

सर्वेश्वर श्रीहरि की इस विविध विचित्रात्मक सकल सृष्टि में अनन्त असंख्य प्राणी अपने-अपने जन्मजन्मान्तरीय कर्मानुसार अपने सत्-असत् कर्मों का उपभोग करते हैं । उनमें सत्कर्म परायण शील प्राणी श्रेष्ठतम शरीर को प्राप्त कर अपने उत्तम कर्मों से अपने जीवन को परम सफल करते हैं । उन प्राणियों में उनके भोग्य शरीरों के अनन्तरूप हैं, उनमें सर्वश्रेष्ठ सर्वदेववन्दनीय गोमाता का पावन स्वरूप है जिसका साङ्गोपाङ्ग वर्णन वेद-पुराणदि धर्म ग्रन्थों मुें विपुल रूप से विद्यमान है । अतः गोमाता सर्वविध रूप से परम पूज्य एवं सर्वदा सर्वविधा अभिरक्षणीय है ।

अखिलब्रह्माण्डनायक निखिलजगन्नियन्ता सर्वेश्वर श्रीकृष्ण भगवान् स्वयं गोसेवा में अभिरत रहकर अपने गोपाल स्वरूप में सर्वदा परम सुशोभित हैं । इसीलिये तो वे श्रीहरि **गावो मे चाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः । गावो मे मध्यतः सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ।** इस दिव्य वचन से गो का महत्व निर्दिष्ट कर रहे हैं । अतः गोधन को हमारी अनादि वैदिक संस्कृति का सर्वतोमुख्य प्रतिपादित किया गया है । वे समस्त जगदाधार प्रभु गोद्विज प्रतिपालक तथा सनातन वैदिक धर्म के संरक्षक है, गोमाता उनकी सर्वस्व निधि है, वस्तुतः गाय धर्म का मुख्य स्तम्भ है, क्योंकि गाय के बिना हमारा कोई भी दैनिक धार्मिक कर्म परिपूर्ण नहीं हो सकता । यज्ञ, श्राद्धकर्मादि में इसके दुग्ध, दधि, घृत, गोमय, गोमूत्र की नितान्त आवश्यकता होती है तथा दैनिक कार्यों में भी दुग्ध,

दधि, घृतादि अत्यावश्यक है अतएव हमारे यहाँ भारतीय संस्कृति में गौ का अत्यन्त महत्व समादर है । हम भारतीय इसे गोमाता कहकर पूजते हैं । गोपालन हमारे धर्म का प्रमुख अङ्ग है गोमाता सम्पूर्ण विश्व की सम्पदा है किन्तु दुर्भाग्य से शासन की उपेक्षा के कारण गोवध का घोर जघन्य कर्म स्वतन्त्रता के बाद भी अनवरत चल रहा है जो भारतराष्ट्र के लिये अत्यन्त घातक यह क्रूर कर्म है । केवल अर्थ दृष्टि से गोमांस का परराष्ट्रों में पर्याप्त मात्रा में विक्रय हेतु निर्यात यह महापापपूर्ण कर्म निरन्तर चल रहा है । जिसका समग्रविधा निरोध हो ।

इसी गोहत्या को अभिलक्षितकर प्रातः स्मरणीय अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर पूज्यपाद श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज द्वारा दुःखितान्तकरणपूर्वक गोरक्षा-उद्देश्य से इस ओर शासन का ध्यान आकृष्ट करने के विचार से सामयिक अति महत्वशाली गोरक्षक इस **गोशतक** का प्रणयन कर सनातन धार्मिक जगत् तथा राष्ट्र को शीघ्र सतत जागरूक करने का पुण्य कर्म सम्पन्न किया है । एतदर्थ मैं भगवान् श्रीराधासर्वेश्वर से पूर्ण दृढ़ निष्ठया प्रार्थना करता हूँ कि महाराजश्री को यथाशीघ्र रोग मुक्त कर धर्म संरक्षणार्थ स्वस्थ करें और दीर्घायु सम्पन्न करें ताकि भविष्य में भी निरन्तर धार्मिक जगत् व राष्ट्र का अभ्युदय सम्पन्न हो सके ।

आशुकवि, निम्बार्कभूषण -

दि० ६/६/२००३ **पं० सत्यनारायण शास्त्री**, अजमेर

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *

श्रीमन्निम्बार्काचार्यपीठाधिराजिताचार्यवर्य श्री श्रीजी-महाराजविरचितगोशतकाख्यखण्डकाव्यविषयकसमुद्गाराः ।

पीठराजितनिम्बार्कोदितं गोशतकं स्फुरद् ।
तामिखं खंसशत् स्वान्ते ज्योतिष्वायोपजायताम् ॥१॥

नवीनं धेनुशतकं समीचीनं समाश्रितः ।
पापलीनोमलीनोऽपि पुण्यैः पीनः प्रजायते ॥२॥

श्रीनिम्बार्काचार्यसन्दिष्टामेकां गामपि शीलयन् ।
भगवद्-भक्तिमाप्नोति शृण्वन् गोशतकं न किम् ॥३॥

शतकं सौरभेयीणां ग्रथयन् जगतां गुरुः ।
सर्वत्र शोभते सम्यक् श्रीगोविन्द इव स्वयम् ॥४॥

आचार्यचरणानुरक्तो--
राधावल्लभः शास्त्री
कचनारिया

वन्दनीयाश्च पूज्याश्च गावः सेव्यास्तु नित्यशः

इस संसार में गौ एक महनीय, अमूल्य और परम कल्याण-प्रद एवं अभीष्ट वरदायिनी है। गौ की महिमा का उल्लेख वेदादि सभी शास्त्रों में मिलता है। गोमाता की महिमा अनन्त और असीम है। जिसके पावन कलेवर में समस्त देवगण निवास कर अपना अहोभाग्य मानते हैं।

सर्वे देवाः स्थिता देहे सर्वदेवमयी हि सा।

(वृहत् पाराशर स्मृति)

अर्थात् शास्त्रों में गौ को सर्वदिवमयी और सर्वतीर्थमयी कहा गया है। गोमाता सर्वमङ्गलमयी है, गौ में समस्त लोक प्रतिष्ठित है। (**गोषु लोकाः प्रतिष्ठिताः**) **गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश** अतएव अगणित ऋषि, मुनि, योगी, तपस्वी, सन्यासी, विरागी, महात्मा जन भी पञ्चगव्य प्राशन को जन्म-जन्मान्तरीय दुरित क्षय का कारण अङ्गीकार करते हैं। (पञ्चगव्य प्राशनं महापातकनाशनम्) गौएँ सम्पूर्ण प्राणियों की माता है। वे सबको सुख देने वाली है।

मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः। (महाभारत)

जिसके गृह में गोमाता दुःखी रहती है। वह व्यक्ति नरक-गामी होता है।

यद् गृहे दुःखिता गावः स याति नरकं नरः।

गोमाता विश्व की अतुलनीय अमूल्य निधि है, अतः इसकी रक्षा राष्ट्र की रक्षा है। विश्व की रक्षा है।

गवां सेवा तु कर्त्तव्या गृहस्थैः पुण्यलिप्सुभिः ।
गवां सेवा परो यस्तु तस्य श्रीर्वधतेऽचिरात् ॥

अर्थात् प्रत्येक पुण्य की इच्छा रखने वाले सद् गृहस्थ को गायों की सेवा अवश्य करनी चाहिये । क्योंकि जो नित्य श्रद्धा भक्ति से गायों की प्रयत्न पूर्वक सेवा करता है । उसकी सम्पति शीघ्र ही वृद्धि को प्राप्त होती है और नित्य वर्धमान रहती है ।

एतदर्थ गोसेवा का माहात्म्य अनन्त है । जैसा कि अधोर्निर्दिष्ट श्लोकों में प्रतिपादित है ।

तीर्थस्थानेषु यत्पुण्यं यत् पुण्यं विप्रभोजने ।
सर्व व्रतोपवासेषु सर्वेष्वेव तपः सु च ॥
यत् पुण्यं च महादाने यत् पुण्यं हरिसेवने ।
भुवः पर्यटने यन्तु सत्यवाक्येषु सर्वदा ॥
यत् पुण्यं सर्वयज्ञेषु दीक्षया च लभेन्नरः ।
तत् पुण्यं प्राप्यते सद्यः केवलं धेनुसेवया ॥

अर्थात् तीर्थ स्थानों में जाने से ब्राह्मण को भोजन कराने से जो पुण्य प्राप्त होता है सभी व्रतों उपवासों तपस्याओं में जो पुण्य स्थित है, महादान देने में जो पुण्य है, श्रीहरिपूजा में जो पुण्य है भूमि परिक्रमा में सत्यवाक्य में दीक्षा ग्रहण करने में जो पुण्य मिलता है, वह पुण्य केवल गाय सेवा से प्राप्त होता है ।

शास्त्र में देखें तो गाय की महिमा के विषय में पूरा एक ग्रन्थ ही बन जायेगा इसलिए मनीषीजन कहते हैं-**गोभिस्तुल्यं न पश्यामि धनं किञ्चिदिहाच्युत** । गोधन समस्त धनों में श्रेष्ठ है ।

फिर भी अत्यन्त खेद का विषय है कि विश्व में गोमाता के प्रति मानवों के हृदय में निष्ठा श्रद्धा-सेवादि का अभाव परिलक्षित होता है, गोमाता के प्रति सद्भावना सुषुप्त होती हुई दृष्टिगोचर होती है ।

अतः पुनरपि गोमाता के प्रति समस्त मनुष्यों के हृदय में पूर्ववत् श्रद्धा पूर्ववत् भक्ति पूर्ववत् आस्था स्फुरित हो जागृत हो एतदर्थ विद्वज्जन वन्दनीय सतत स्मरणीय सरल शुचि समुदारान्तः-करण गोसंरक्षक संस्कृत संस्कृति संरक्षक सद्धर्माचार प्रचार परायण मृदुल सुस्वभाव परमादरणीय अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री श्रीजी महाराज ने परम कृपा कर **गोशतकम्** की अनुपम अद्वितीय रचना करके जो मानव मात्र पर अनुग्रह किया है, वह निश्चय ही अतिशय महत्वपूर्ण कार्य है ।

गोशतकम् आज के दिग्भ्रान्त जन मानस को गोसेवा की ओर अग्रसर करने का दृढ़तम सोपान है । गोशतकम् का भावगाम्भीर्य विलक्षण है । रचना सरस सरल एवं अतिशय मधुर है । जैसा कि अधोलिखित श्लोकों से अवगत है ।

रोग शोकहरा पूज्या सर्वपातकनाशिनी ।
गोमाता विश्वमाता च साऽऽराध्यावैष्णवोत्तमैः ॥
आधिव्याधिहरं श्रेष्ठं गोमूत्रञ्च रसायनम् ।
उदरसर्वरोगघ्नं वर्ततेऽतिहितावहम् ॥

इस रचना के अनुशीलन से समस्त जन समुदाय में गोमाता के प्रति स्वतः सद्भाव जागृत होगा । जिससे विश्व को गोवध के निरोध की दिशा मिलेगी समस्त जन गो माहात्म्य को समझेंगे ।

मैं ऐसी अभूतपूर्व दिव्य परम पावन कृति के रचयिता महाराजश्री के पादारविन्दों में कोटिशः प्रणाम समर्पित करता हूँ । और साथ ही पूज्यपाद आचार्यश्री के इस दिव्यातिदिव्य कृपाप्रसाद के रसास्वाद का सौभाग्य सभी को प्राप्त हो ऐसी श्रीराधामाधव-श्रीसर्वेश्वर प्रभु के चरणाविन्दों में अभ्यर्थना है ।

गोमातुर्जयोऽस्तु ।

पूज्य आचार्यश्री के चरणारविन्दों का चञ्चरीक-

रमाकान्त शर्मा

नव्य व्याकरणाचार्य (निम्बार्कभूषण)

प्राध्यापक-श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय

निम्बार्कतीर्थ - सलेमाबाद
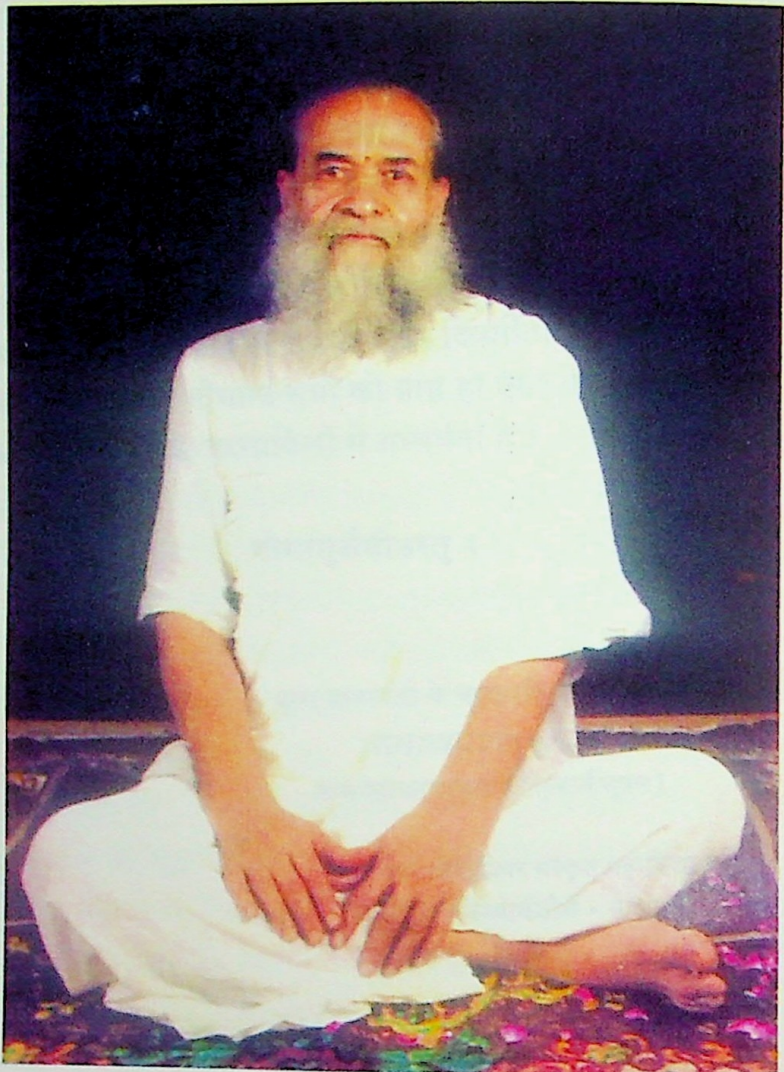
अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य
श्री ''श्रीजी'' महाराज

भारतीय अनादि वैदिक सनातन संस्कृति की आधार स्वरूपा श्रीगोमाता है

गावो विश्वस्य मातरः, गोभि र्न तुल्यं धनमस्ति किञ्चित् गोमाता सम्पूर्ण विश्व की माता है । गोमाता के सदृश कोई भी सम्पदा नहीं । यह सुरवृन्दवन्दिता एवं कोटि-कोटि देव समूह की अधिष्ठान स्वरूपा है । इसके गोमय में श्रीमन्नारायण भगवान् श्री विष्णु की ऐश्वर्या धिष्ठात्री देवी श्रीलक्ष्मी का मङ्गलमय निवास है। इसके पञ्चगव्य समस्त आधि-व्याधि-शोक-सन्ताप को निवारण करने वाले हैं । इसका पावन मङ्गल दर्शन परम कल्याणकारी शुभ-दायक श्रेष्ठतम है । गोसेवा, गोदान से अनन्त पुण्य फल प्राप्त होता है । हमारे श्रुति-स्मृति-सूत्र--तन्त्र-पुराणादि समग्र शास्त्र इसकी पवित्र महिमा का अनवरत गान करते हैं । अनन्त कोटिब्रह्माण्डाधि-पति क्षराक्षरातीत समस्त जगदाधार सर्वनियन्ता सर्वेश्वर व्रजेश्वर वृन्दावनविहारी राधाविहारी आनन्दकन्द नन्दनन्दन मुरलीमनोहर श्यामसुन्दर भगवान् श्रीकृष्ण व्रजधाम में अनन्त गोवृन्द परिवेष्टित होकर सतत उनकी परिचर्या में स्वयं तत्पर रहते हैं । गोदुग्ध, गोदधि, गोनवनीत, गोघृत, गोतक्र आदि सभी मानव को यथेष्ठ बल-बुद्धि आयु-आरोग्य प्रदायक पावनता आदि देने वाले दिव्यगुणगणों से परिपूर्ण हैं । गोमूत्र अपरिमित शक्ति से सम्पन्न है । गोदुग्ध सेवन से तत्काल शक्ति, स्फूर्ति एवं मेधा गुणवत्ता प्राप्त होती है । गोदुग्ध, गोदधि, गोतक्र के कल्प-प्रयोग से उदर-व्याधि परिशमन में अद्भुत

चमत्कारपूर्ण लाभ होता है । गोघृत में तो अपरिमेय गुण है **आयुर्वैघृतम्** यह आयुर्वेद का लोक विश्रुत वचन है अर्थात् गोघृत दीर्घायु प्रदाता है । यज्ञानुष्ठान में गोघृत की पवित्र आहुति से देववृन्द सन्तुष्ट-मनस्क होकर अभिलषित यथेष्ठ फल प्रदान में तत्पर रहते हैं । जिसके गोबर के उत्तम खाद से शुद्ध अन्नोत्पादन में वृद्धि तथा उसमें अतीव मधुरता, सरसता, पवित्रता, बलदायिनी शक्ति आदि विविध गुण निहित रहते हैं । कृत्रिम रासायनिक खाद से कुछ काल के लिये अन्नाधिक्य भले ही हो जाय किन्तु उससे उत्पन्न होने वाला अन्न स्वास्थ्य के लिये परम हानिप्रद है और भूमि की उर्वरा शक्ति भी क्षीण हो जाती है अतः गोबर का खाद ही सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वथा हितकारी है । गोमाता जिस स्थान पर अवस्थित हो, विचरण करे वह स्थान अतिशय पावन बन जाता है । **अग्निपराण** के इस वचन से गो महिमा स्पष्ट है,--**गावः पवित्रा माङ्गल्या गोषु लोकाः प्रतिष्ठिताः** स्कन्दपुराण में भी-

लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनुरूपेण संस्थिता ।
घृतं वहति यज्ञार्थे मम पापं व्यपोहतु ।।

कृत्वा पूजां गवां ताभ्यो ग्रासं दत्वा नमेच्च ताः

पद्मपुराण के गोपाष्टमी महोत्सव प्रसङ्ग में--
शुक्लाष्टमी कार्तिके तु स्मृता गोपाष्टमी बुधैः ।
तद्दिने वासुदेवोऽभूद् गोपः पूर्वं तु वत्सपः ।।
अत्र कुर्याद् गवां पूजां गोग्रासं गोप्रदक्षिणम् ।
गवानुगमनं कार्यं सर्वान्कामानभीप्सता ।।

उपर्युक्त इन शास्त्रीय वचनों का सारांश यही है कि गोमाता परम पवित्र मङ्गलस्वरूप है, इसमें सभी लोक प्रतिष्ठित हैं । समस्त लोकपालों की लक्ष्मी ही गोरूप से अवस्थित है । जो यज्ञ हेतु अमृतरूप दिव्य घृत प्रदान करती है ऐसी यह गोमाता हमारे सम्पूर्ण पापपुञ्जों को प्रक्षालित करे । जो गो-पूजन श्रद्धायुक्त होकर करे और उनको सुन्दर मधुर ग्रासदान के साथ प्रणाम करे । **पद्मपुराण** के इन वचनों का भाव भी अवधारणीय है यथा--कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि जो बुधजनों द्वारा गोपाष्टमी नाम से अभिहित है उस दिव्य तिथि को सर्वेश्वर भगवान् वासुदेव श्रीकृष्ण गोपरूप से गोवत्सपालन उनके चारण में प्रवृत्त होते हैं मुख्यतः इस पवित्र दिन गो-पूजन, गो-ग्रास, गोप्रदक्षिणा (गो-परिक्रमा) गोमाता के पृष्ठ भाग में सश्रद्ध प्रणति पूर्वक अनुगमन करे जिससे अपने अभीष्ट पवित्र मनोरथ सभी पूर्ण होते हैं ।

यजुर्वेदीय इस मन्त्र से गो-माहात्म्य का स्वरूप कितना अनुपम है,--

ब्रह्म सूर्यसमं ज्योतिर्द्यौ समुद्रस सरः ।
इन्द्रः पृथिव्यै वर्षीयान् गोस्तु मात्रा न विद्यते ।।

(यजुर्वेद २३/४८)

यह मानव जिस ब्रह्म विद्या के माध्यम से परमानन्द को प्राप्त करता है जिसकी उपमा इस सूर्य से दी जाय, ऐसे ही द्युलोक की समुद्र से और सम्पूर्ण पृथ्वी की देवेन्द्र स उपमा देवें, परन्तु यावन्मात्र प्राणियों के असीम उपकारक केवल गौ ही एकमात्र उपमा

रहित है, यथार्थ में गौ जैसा इतर कोई भी प्राणी मानव के लिये इस जगत् में श्रेयस्कर नहीं है ।

महाभारत में ऋषिवर च्यवन महाराज नहुष को गो माहात्म्य का निरूपण कर रहे हैं,--

गोभिस्तुल्यं न पश्यामि धनं किञ्चिदिहाच्युत ॥
कीर्तनं श्रवणं दानं दर्शनं चाऽपि पार्थिव ॥
गावः स्वर्गस्य सोपानं गावः स्वर्गेऽपि पूजिताः ।
गावः कर्मदुहो देव्यो नान्यत्किञ्चित्परं स्मृतम् ॥

(महाभारत-अनुशासनपर्व, दानधर्मपर्व-५१, २६, ३४)

हे राजन् ! गौ के सदृश मैं इस भूतल पर अन्य किसी वस्तु को नहीं देखता । गो-सदृश इतर कोई सम्पदा नहीं । गौ का नाम-कीर्तन, उसके मंगल नाम का श्रवण तथा उसका दर्शन आदि सभी परम कल्याणकारक है ।

गौ स्वर्ग प्राप्ति का परम साधन रूप सोपान अर्थात् सीढ़ी हैं । गौ स्वर्ग में सदा पूजित रहती है । गौ समस्त पवित्र मनोरथों को देने वाली देवी रूप है । इसके समान अन्य कोई भी पदार्थ प्राणी इस विश्व में नहीं यह शास्त्र निर्देश है ।

वस्तुतः शास्त्र प्रतिपादित इन दिव्यतम वचनों से स्पष्ट है कि गोमाता वेदविहितविधि से सर्वदा अभिवन्दनीय एवं अभिरक्षणीय है । यह व्यक्त करते हुए महती वेदना है कि भारतवर्ष में जो धर्मप्राण राष्ट्र है जिसकी परम दिव्य महिमा हमारे संस्कृत-हिन्दी,

व्रजभाषा आदि समस्त साहित्य वाङ्मय ग्रन्थों में पूर्णतः परिवर्णित है ऐसे इस उच्चतम महान् राष्ट्र में स्वतन्त्रता प्राप्ति के अनन्तर भी गोहत्या विपुलमात्रा में प्रतिदिन इतने बीभत्स रूप से होती है जो देश के पवित्र भाल पर महान् कलङ्क है। केवल अर्थलोलुपता और गो-आमिष भक्षियों को सर्वविधा सन्तुष्ट करने के लिये यह अकल्पनीय अतिगर्ह्य जघन्यतम अतिघोर अतिक्रूर कर्म करने के लिये देश के उच्च प्रशासक स्वयं संलग्न हैं। भारत सरकार की यह विचारधारा नितान्तरूपेण परम निन्दनीय है। जिस राष्ट्र के रक्षक ही यदि भक्षक बन जाँय तो किस विधा उस राष्ट्र का मङ्गल हो। यह अतीव दुर्भाग्य है कि अपने स्वतन्त्र भारत के निर्वाचित नेतागण केवल अपने ही सम्पोषण में प्रयत्नशील हैं। राष्ट्र पर चाहे वह किसी भी प्रकार की विपरीत अवस्था आवे वह युद्ध की आतङ्कवाद की प्राकृतिक अकाल आदि की अवस्था त्रिविधताप की प्रजा वैपरीत्य की आबालवृद्धवनिता की सम-विषम किसी भी रूप में दुरधिगम्य आपदा आवे उन्हें कोई चिन्ता नहीं, वे अपने स्वार्थतत्परता में इतने दिग्भ्रान्त हैं जिसका उल्लेख करना भी अमङ्गलरूप है।

जो हमारी अनादि वैदिक सनातन संस्कृति प्राणिमात्र की हित कामना करती है। जड, चेतन, मानव, पशु-पक्षी, कीट-पंतग सबकी मङ्गलकामना में सदा तत्पर है, उस संस्कृति में जिनका सम्पोषण हो उनके निर्देशन में गोधन की विपुल रूप में नृशंस हत्या हो यह कितना घोर पतन है। गोमाता की एक रक्त बिन्दु भी जिस धरा पर निपतित हो वहाँ अनेक उत्पात और अनर्थ होते हैं। और

जहाँ पर अगणित मात्रा में दैनिक गोवध हो रहा हो वहाँ पर विविध विपरीत बाधाओं का प्राबल्य होना स्वाभाविक है । गोवध निरोध के लिये धर्म सम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज (वाराणसी), पुरीपीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य श्रीनिरञ्जनदेवतीर्थजी महाराज, ज्योतिष्पीठाधीश्वर शंकराचार्य श्रीकष्णबोधाश्रमजी महाराज, श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी वृन्दावन, स्वामी श्रीवामदेवजी महाराज, पञ्चखण्डपीठाधीश श्रीराम-चन्द्रजी वीर (वैराट-जयपुर) प्रभृति अनेक शीर्षस्थ विशिष्ट महानु-भावों के निर्देशन में गोहत्या-निरोध के लिये नवम्बर १९६६ को परम विराट् ऐतिहासिक पन्द्रह लाख सत्याग्रहियों के दिल्ली संसद् भवन के समक्ष प्रदर्शन हुआ था जिसमें अपने आत्मीय २०० सन्तों के साथ हम स्वयं भी सम्मिलित थे । विशाल मञ्च पर समासीन सभी प्रमुख धर्माचार्य, सन्त-महात्मा, महामण्डलेश्वर उपस्थित थे । जहाँ पर सरकार द्वारा गोलीकाण्ड का बीभत्स ताण्डव हुआ जिसमें सहस्रों गोभक्त सन्त-महात्मा गोमाता के प्रति सदा सर्वदा के लिये समर्पित हो गये। ऐसा जघन्य कर्म आज भी अपने हृदय पटल पर अङ्कित है । ऐसी अवस्था में प्रशासन को गम्भीरता से चिन्तन पूर्वक विवेकविधा से इस गोहत्या के महान् कलङ्क को अविलम्ब प्रक्षालित कर देश की प्रतिष्ठा को उच्चतम गौरव को महान् आदर्श को सुरक्षित रखें । इसी में अपने राष्ट्र का समग्र दृष्टि से परम हित एवं मङ्गल समाहित है ।

प्रस्तुत **श्रीगोशतकम्** ग्रन्थ इसी उपर्युक्त उल्लिखित भाव का द्योतक ग्रन्थ है जिसके मनन, अनुशीलन, चिन्तन से गोमाता के

यथार्थ स्वरूप का परिज्ञान सम्भव हो । लघुकलेवरात्मक यह ग्रन्थ किस रूप में उपादेय होगा यह तो आप उसके अवलोकन से परिशीलन से अनुभव करेंगे । जगन्नियन्ता सर्वेश्वर श्रीराधामाधव प्रभु सभी को सद्बुद्धि, प्रेरणा प्रदान करें जिससे गोमाता की सर्वविधा सुरक्षा हो । सरकार का यह नितान्त कर्तव्य होना अभीष्ट है कि वह ऐसा दृढ प्रावधान बना दे जिससे सम्पूर्ण गोवंश का वध सर्वथा निषिद्ध हो और पूरे भारत में एक अपूर्व आनन्द की भावना बने । विस्मय यही है यह कथन यह पवित्र भाव इस पुस्तक तक ही सीमित न रहे इस **श्रीगोशतकम्** से वे पावन प्रेरणा लें और तत्काल इस हितकारी परम श्रेयस्कर कार्य को कार्यान्वित कर भारतवर्ष के उज्ज्वल स्वरूप की सर्वविध रक्षा करें । भारतीय समग्र कोटि-कोटि जन मानस को गोरक्षार्थ कटिबद्ध होना नितान्त आवश्यक है । अन्त में पुनः उन अकारणकरुणावरुणालय सर्वद्रष्टा सर्वेश्वर राधाविहारी आनन्दकन्द नन्दनन्दन गोपाल व्रजेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण के चरणकमलों में पुनः पुनः यही मङ्गलमयी अभ्यर्थना - कामना है कि गोमाता के इस संकट का अपने संकल्प मात्र से ही परिहार का अनुग्रह करें ।

श्रीगोमाताहितकामनाकामः--

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः

श्रीनिम्बार्क साहित्य में गोमाता

काह्न ठाड़े री गाइन के गन में ।
कहा कहौं अनुपम शोभा री राजत, मानों श्यामघन शरद घनन में ॥
वंशी बजावत गावत मधुरैं सुर सुधि, न रही सुनि काहू तन-मन में ।
"श्रीवृन्दावन प्रभु" की छवि निरखत, कोउ न रहत अपअपनैं पनन में ॥

धौरी धूमरी पियरी कारी, काजरि कहि कहि टेरत ॥
वरह मुकुट शिर कामरि कांधे, दक्षिण कर पीताम्बर फेरत ॥
सुन्दर नागर नट यमुना तट, लियें लकुट गाईंन निवेरत ।
सुधि न रही मोतन मैं तनकी, "श्रीवृन्दावन प्रभु" की छवि हेरत ॥

चले गिरिराज तैं मित्र समाज मैं, साज सबै नटराज को कियें ।
मृदु गावत वेनु बजावत हैं, पुलकौं पशुपंछी द्रुमोऊ हियें ॥
रही अनिमेष ह्वै गैयाँ सबै, मन मोहुन रूप अनूप पियें ।
मुख चन्द्र मनौं अरविन्द से नैंन, बड़े लगनैं श्रुतिमूल छियें ॥
"श्रीवृन्दावन प्रभु" देखन कौं, ऊत चाहि रही सब घोष तियें ॥

आजु विराजत मदन गुपाल ।
नटवर वेश किये मन मोहन, उर वैजन्ती माल ॥
चित्रित नाना रंग श्याम अंग, काछैं काछिनि लाल ।
ग्रथित कुसुम पल्लव जूड़ा पर, सोहत बर्हीं पिच्छ विशाल ॥
गावत आवत गाइन पाछैं, वेनु बजावत परम रसाल ।
"श्रीवृन्दावन प्रभु" कौं देखन उठि, धाईं तजि गृह कारज बाल ॥

--अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीवृन्दावनदेवाचार्यजी महाराज प्रणीत - श्रीगीतामृतगङ्गा से संकलित ।

✻ श्रीसर्वेश्वरो जयति ✻

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर-

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य-

श्रीश्रीजी महाराज--

विरचितम्--

✻ श्रीगोशतकम् ✻

(१)

राधासर्वेश्वरं वन्दे श्रीनिकुञ्जविहारिणम् ।
दिव्यहंसावतारञ्च श्रीकृष्णं करुणार्णवम् ।।

वृन्दावन निकुञ्जविहारी भगवान् श्रीराधासर्वेश्वर एवं परम करुणावरूणालय दिव्य स्वरूप श्रीहंसावतार के रूप में अतिशय सुशोभित सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण की सर्वात्मना अभिवन्दना करते हैं ।।१।।

(२)

श्रीमन्महर्षिवर्य्यांश्च सनकाद्यान्प्रणौम्यहम् ।
देवर्षिं नारदं वन्दे श्रीनिम्बार्कं जगद्गुरुम् ॥

श्रीसनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार इन चतुः-स्वरूप महर्षिवर्यों को, सतत श्रीहरिगुणगानपरायण वीणा सुशोभित श्रीनारदजी एवं सुदर्शनचक्रावतार आद्याचार्य श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यश्री की वन्दना करते हैं ॥२॥

(३)

गोमातरं हृदा वन्दे कामधेनुं सुरार्चिताम् ।
नन्दनन्दनकृष्णेन चाऽभिवन्द्यां पयस्विनीम् ॥

विधि-शिव-देवेन्द्रादि सुरवृन्दों द्वारा समर्चित, परात्पर रस परब्रह्म परमानन्दकन्द नन्दनन्दन गोविन्द सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा अभिवन्दित कामधेनु पयस्विनी श्रीगोमाता की अपने अन्तः करण से मङ्गलमयी अभिवन्दना करते हैं ॥३॥

(४)

श्रीमद्गुरोः पदाम्भोजं स्मृत्वा ध्यात्वा पुनः पुनः ।
गोसम्पालनमाहात्म्यं गोशतकं विरच्यते ॥

अपने परमाराध्य श्रीमद् - गुरुदेव के श्रीचरणकमलों का बारम्बार ध्यान एवं स्मरण करके श्रीगोमाता के परिपालन रूपात्मक माहात्म्य द्योतक यह प्रस्तुत **श्रीगोशतकम्** ग्रन्थ रचना का शुभारम्भ कर रहे हैं ॥४ ॥

*

(१)

गोमाता निर्जरैः सेव्या निगमैरभिवर्णिता ।
ऋषिभिर्मुनिभिर्वन्द्या जयतीह हितावहा ॥

(२)

श्रीकृष्णेन समाराध्या रामेण समुपासिता ।
गोमाता सततं पूज्या जयतीड्या सुमङ्गला ॥

(३)

पुराणैस्तन्त्रशास्त्रैश्च गीयमाना शुभप्रदा ।
सम्पूज्या शास्त्रमर्मज्ञैर्गोमाता जयतीह सा ॥

(४)

गोमूत्र-गोमयाऽऽधारा दधि-दुग्ध-घृतप्रदा ।
गोमाता श्रुतिसम्पाद्या जयतीन्दुसुधावहा ॥

ब्रह्मरुद्रेन्द्रादि देव वृन्दों द्वारा सर्वदा परिसेवित, समस्त वेदऋचाओं द्वारा अभिवर्णित, ऋषि--मुनीश्वरों द्वारा अभिवन्द्य, परमहितकारिणी श्रीगोमाता की नितान्त रूपेण इस धरा धाम पर सर्वदा सर्वत्र मङ्गल जय परिव्याप्त है ॥१॥

अखिलब्रह्माण्डनायक सर्वद्रष्टा सर्वान्तरात्मा व्रजेन्द्रनन्दन निखिल भुवनमोहन सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण से आराधित, कौशल्यानन्दवर्द्धन दशरथनन्दन राजीवलोचन नयनाभिराम सर्वान्तर्यामी राघवेन्द्र भगवान् श्रीराम द्वारा समुपास्यमान, निरन्तर परम पूज्या सम्प्रार्थिता मङ्गल स्वरूपा श्रीगोमाता की इस समस्त भूतल पर सदा सर्वदा जय जयकार है ॥२॥

पुराण-तन्त्र-सूत्रादि शास्त्रों द्वारा जिसके मङ्गलमय माहात्म्य का गान किया जाता है । शास्त्र रहस्य के ज्ञाता श्रेष्ठ सुधीजनों द्वारा प्रपूजित परम मङ्गलकारी उस गोमाता की सदा ही इस लोक में जय प्रगुञ्जित है ॥३॥

श्रुति मन्त्र जिस गोमाता की अनुपम महिमा वर्णन करते हैं । जो पवित्र दूध, दही, घृत को प्रदान करती है । जिसके गोमूत्र, गोमय अतिशय श्रेष्ठ है जो विभिन्न रूप से परम उपयोगी है । चन्द्रवत् दुग्धरूपी अमृतदायिनी ऐसी परमोत्तम गोमाता की समस्त भुवनों में सर्वदा जय प्रतिष्ठित है ॥४॥

(५)

पञ्चगव्यप्रदा माता सर्वदा हितकारिणी ।
शुष्कपत्रतृणाऽऽहारा गोमाता जयतीश्वरी ॥

(६)

पुराकाले नरेन्द्रैश्च बहुरूपेण रक्षिता ।
प्रजाजनैः समाराध्या गोमाता जयतीष्टदा ॥

(७)

तृणादिनित्यनिर्वाहा नित्यं दुग्धसुधाप्रदा ।
गीर्वाण–समधिष्ठाना गोमाता जयतीष्टिदा ॥

(८)

यद्गोमये सदा लक्ष्मी–निवासः शास्त्रसम्मतः ।
सा गोमाता हृदा पूज्या जयतीन्द्रादिसेविता ॥

(९)

सेवया परिसन्तुष्टा समस्तवैभवप्रदा ।
अनन्तफलदा दिव्या गोमाता जयतीशगा ॥

दूध[1] - दही[2] - घृत[3] - मूत्र[4] - गोबर[5] इन पञ्चगव्यों को प्रदान करने वाली जिसका यह पञ्चगव्य असीम गुण सम्पन्न परम पावन है । सर्वदा सबका हित करने में तत्पर, केवल सूखे पत्ते और सूखे घास के आहार से अपना निर्वाह करती है ऐसी भगवत्स्वरूपा गोमाता जिसकी इस धराधाम पर सर्वत्र सदा जय है ॥५॥

प्राचीन काल में प्रजापालक राजाओं द्वारा गोमाता की विविध रूप से रक्षा होती थी, इसी प्रकार समस्त प्रजा के द्वारा भी गोमाता की अर्चा-आराधना-सेवा की जाती थी ऐसी उस परम श्रेष्ठ अपने भक्तों के इष्ट अर्थात् उनके आराध्य को किंवा इष्ट अर्थात् अभिलषित पदार्थ को देने वाली कामधेनु स्वरूप गोमाता की सदा ही जय है ॥६॥

दुर्वा-तृण आदि वन्य वस्तुओं से सदा निर्वाह कर अपना जीवन यापन करने वाली अमृत स्वरूप सुन्दर दूध देने में सदा तत्पर, कोटि-कोटि देव समूह जिसके मङ्गलमय पावन वपु में निवास करते हैं ऐसी गोमाता की उल्लास पूर्वक जयगान है ॥७॥

जिसके पवित्रतम गोमय (गोबर) में भगवान् श्रीविष्णु की ऐश्वर्याधिष्ठात्री देवी श्रीलक्ष्मी का निरन्तर निवास है जो शास्त्र सम्मत है । वह इन्द्रकुवेरादिदेववन्दित गोमाता इस जगत् में हृदय से सर्वदा पूज्य उसकी सतत जय है जय है ॥८॥

श्रद्धा पूर्वक की गई सेवा से जो अत्यन्त सन्तुष्ट अर्थात् प्रसन्न होती है, जगत् के उत्तमोत्तम वैभव को प्रदान करने वाली, अनन्त फल प्रदायक दिव्य स्वरूप सर्वेश्वर सानिध्य को प्राप्त कराने वाली श्रीगोमाता उसकी हृदय से सदा जय है ॥९॥

(१०)

रोगसंहारसामर्थ्यं यद्-गोमूत्रे प्रतिष्ठितम् ।
तद्गोमाता हृदाराध्या जयतीक्षुरसाप्लुता ॥

(११)

श्रीगोमाता सदा श्रेष्ठा मातृरूपेण तिष्ठति ।
वन्दनीया बुधैश्चारु जयतीह तृणाशना ॥

(१२)

सेवया वरदा शीघ्रं परमानन्ददायिनी ।
हरिणा नितरां सेव्या गोमाता जयति प्रिया ॥

(१३)

यस्याः सुमधुरं दुग्धं वात-पित्तादिसंहरम् ।
सा गोमाता सदा ध्येया जयतीश-समीडिता ॥

(१४)

यस्या दधि परं हृद्यं पुष्टिदं पवनापहम् ।
सा कामधेनुजा धेनु-र्लोके जयति विश्रुता ॥

शरीर में होने वाले नानाविध रोग उनके निवारण में जिसके पवित्रतम मूत्र में अपार सामर्थ्य विद्यमान है ऐसी मधुर दुग्ध से परिपूर्ण गोमाता अपने निर्मल चित्त से सदा ही आराधनीय है, इस निखिल विश्व में उसकी सर्वदा जय है ॥१०॥

यह गोमाता सदा ही श्रेष्ठ स्वरूप है जो विश्व की एकमात्र कृपामयी माता है, उत्तम विप्रसुधीजनों द्वारा सम्यक्तया अभिवन्दनीय है । ऐसी मङ्गल रूप तृण सेवन करने वाली गोमाता उसकी इस परम सुरम्य पावन भारत की वसुधा पर मङ्गल जय है ॥११॥

सेवा से अविलम्ब अभिलषित उत्तम वर को देने वाली परमानन्द प्रदान करने में सदा समुत्सुक सर्वेश्वर हरि भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा सेव्यमान हृदयाभिराम श्रीगोमाता की विवेक पूर्वक हम जय गान करते हैं ॥१२॥

जिसका सुधा स्वरूप अति मधुर दुग्ध वात-पित्तादि दोषों को हरने वाला है ऐसी सर्वेश्वर श्रीकृष्ण से सम्प्रार्थित गोमाता सदा ही ध्यान योग्य है उसकी सम्पूर्ण व्रज मण्डल में नित्य जय है ॥१३॥

जिसका दही परम हृद्य अर्थात् हृदय के लिये अति हितकारी है शरीर में शक्ति प्रदान करने वाला वात को दूर करने में समर्थ ऐसी कामधेनु रूप गोमाता की इस संसार में सर्वश्रेष्ठ भारतवर्ष की पवित्र भूमि पर सर्वदा जय है ॥१४॥

(१५)

यदीयनवनीतञ्च हितं शिशोर्बलाऽग्निकृत् ।
वात - पित्तहरं वृष्यं सा धेनुर्जयतीन्दिरा ॥

(१६)

यद् - घृतं स्वादु चाक्षुष्यं वह्निकारं रसायनम् ।
वात - पित्तघ्नमायुष्य - प्रदं सा जयतीह गौः ॥

(१७)

यस्यास्तक्रं सुधारूपं ग्रहणीरोगनाशनम् ।
दीपनं स्वादुवातघ्नं सा धेनुर्जयति ध्रुवम् ॥

जिसका मक्खन अत्यन्त हितप्रद बालकों के लिये बलप्रद जठराग्नि वर्द्धक, वात-पित्त को हरने वाला शक्ति वर्द्धक ऐसी दिव्य गुणगणालङ्कृत धेनु रूप महालक्ष्मीरूपा गोमाता की सदा ही जय है ॥१५॥

जिसका घृत अतीव सुस्वादु नेत्र ज्योति वर्द्धक जठराग्नि उद्दीप्त करने वाला परम रसायन है, वात-पित्त शामक, आयुप्रद एवंविधा दिव्य स्वरूपा श्रीगोमाता जो परम कल्याण-मयी उसकी इस भूतल पर सदा जय जयकार है ॥१६॥

जिसकी तक्र (छाछ) अमृत तुल्य और ग्रहणी अर्थात् उदरस्थ आन्त्र (आँत) की व्याधि अतिसार, रक्तातिसार-आमातिसार (आँव) आदि विविध रोग निवारक तथा दीपन, स्वादु, वातहर, पाचन आदि विशिष्ट गुण तक्र में समाहित है । **तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्** तक्र तो सुरराज इन्द्र को प्राप्त होना भी अतिदुर्लभ है । **न तक्रदग्धाः प्रभवन्ति रोगाः** आयुर्वेद के इस वचन से सुस्पष्ट है कि तक्रकल्प से या तक्र सेवन से नष्ट हुए रोग पुनः प्रकट नहीं होते । **भोजनान्ते पिवेत्तक्रम्** भोजन के अन्त में तक्र पान परम हितकर है । भगवान् श्रीधन्वन्तरि श्रीहरि के नित्य दिव्य पार्षद श्रीगरुड़जी को संकेत कर रहे हैं **तक्रसेवी** अर्थात् तक्र सेवन करने पर कभी कोई उदर रोग से आक्रान्त नहीं होता यह तक्र भी गोदधि द्वारा ही निर्मित हो गोदधि-तक्र में ये दिव्य गुण समाविष्ट हैं ऐसी पावन स्वरूपा गोमाता की इस लोक में निरन्तर जय है ॥१७॥

(१८)

पञ्चगव्यं सुधारूपं सर्वपावनकारकम् ।
उदर - रक्तदोषघ्नं चर्मव्याधिं व्यपोहति ॥

(१९)

पञ्चामृतं सुधाकोष - मभिषेकशुभं प्रभोः ।
अतीवपावनं दिव्यं रोचते सेवने प्रियम् ॥

(२०)

आधि - व्याधिहरं श्रेष्ठं गोमूत्रञ्च रसायनम् ।
उदर - सर्वरोगघ्नं वर्ततेऽतिहितावहम् ॥

(२१)

कफ - वातादिशूलघ्नं गोमूत्रं परमौषधम् ।
पाण्डुरोगहरं कण्डू-व्याधिघ्नमस्ति दीपनम् ॥

गोमाता द्वारा प्राप्त होने वाला दुग्ध[१], दधि[२], घृत[३], मूत्र[४], गोमय[५] यह पञ्चगव्य अमृत के समान है और अपावन को भी पावन करने वाला उदर व्याधि एवं रक्त के दोष को हरने वाला चर्मगत कुष्ठ, पामा (खुजली) आदि व्याधियों को शीघ्र ही नष्ट कर देता है ॥१८॥

दूध[१], दही[२], घृत[३], मधु[४], शक्कर[५] यह पञ्चामृत नाम से प्रसिद्ध है इनमें दूध, दही, घृत ये तीन द्रव्य गोमाता से ही प्राप्त होते हैं जो असीम गुण सम्पन्न हैं । यह पञ्चामृत अमृत रूप श्रीहरि के महाभिषेक में प्रयुक्त होता है और परम मङ्गलकारी है । अत्यन्त पावन और दिव्य है सेवन करने में अत्यन्त मधुर एवं रुचिकर है और अतिशय पवित्र है ॥१९॥

जिस गोमाता का मूत्र परम रसायन है, समस्त आधि-व्याधि को हरने वाला अत्यन्त श्रेष्ठ है । उदर के सम्पूर्ण रोगों का निवारण करता है और परम हितकारक सर्वोत्तम है । गोमूत्र के सेवन से रोग शमन के साथ पवित्रता भी प्राप्त होती है इसमें अनन्त गुण सन्निहित है अपरिमेय है इसके सम्बन्ध में जितना भी विवेचन किया जाय स्वल्प है ॥२०॥

कफ-वातादिक के तीव्र शूल को नष्ट करने वाला, पाण्डू अर्थात् रक्ताल्पता रोगों को हरने में दिव्यौषध रूप, खुजली निवारक उदराग्नि दीपन करने वाला अतीव गुणकारी यह गोमूत्र है ॥२१॥

(२२)

आध्मान–कुष्ठ–शोथघ्नं गुल्म–श्वासनिवारकम्।
कर्णशूलहरं शीघ्रं गोमूत्रमस्ति शोभनम् ॥

(२३)

गोमूत्रे विविधाः क्षाराश्चतुर्विंशतिसंख्यकाः ।
षड्विधं खनिजं द्रव्यं वैद्यैश्चारु प्रवर्णितम् ॥

(२४)

ताम्रादिधातवस्तस्मिन्सेवने स्वर्णतां गताः ।
प्राप्नुवन्तीति वैशिष्ट्यं गोमूत्रस्य प्रभावतः ॥

(२५)

गोमाता वस्तुतः श्रेष्ठा सर्वमङ्गलदायिनी ।
अनन्तगुणसम्पन्ना विश्वमाताऽस्ति स्वर्गदा ॥

(२६)

अघ्न्याऽस्ति सर्वदा पोष्या रक्षणीया च पूर्णतः ।
वदन्ति निगमा नित्यं गोमाता परिशोभते ॥

आध्मान (आफरा) उदर में आजाय कुछ व्याधि होने पर, गुल्म अर्थात् उदर में शूल हो, श्वास रोग, कर्ण (कान) में वेदना हो तत्काल शमन करने में अतीव उत्तम गोमूत्र है । इसके सेवन मात्र से इन उग्र व्याधियों का निश्चय निवारण होता है ॥२२॥

गोमूत्र में विविध रूप में चौबीस क्षार विद्यमान हैं । छ प्रकार के खनिज द्रव्य रहते हैं, यह रस मर्मज्ञ प्राचीन आयुर्वेद वेत्ताओं ने सम्यक् प्रकार से वर्णन किया है । अतः गोमूत्र परम शक्तिशाली चमत्कारी दिव्यौषधि है ॥२३॥

गोमूत्र में ताम्र (तामा) आदि धातु भी निहित हैं । गोमूत्र सेवन करने पर ताम्र धातु स्वर्ण के रूप में परिर्तित हो जाता है जो अत्यन्त विलक्षण प्रभाव पूर्ण इसमें वैशिष्ट्य है । अनेक विध रोगों के परिशमन में गोमूत्र अपार शक्तिमय परम रसायन रूप है ॥२४॥

वास्तव में गोमाता सबका मङ्गल करने वाली परम श्रेष्ठ अनन्त गुणों से परिपूर्ण स्वर्गादि लोकों की प्राप्ति कराने वाली विश्वमाता गोमाता है ॥२५॥

सर्वदा वह सभी प्रकार से अभिरक्षणीय है उस पर किसी प्रकार का कोई प्रहार न करे वह सदा अवध्य है । जिसके सम्बन्ध में समग्र वेद मन्त्र उसी का गान करते हैं । ऐसी पुण्य स्वरूपा गोमाता सदा सुशोभित है ॥२६॥

(२७)

पावनं गोमयं चाऽस्ति चर्मरोगनिवारकम् ।
अपस्मारमहाव्याधि – नाशनं भूमिलेपनम् ॥

(२८)

अन्नाद्युत्पादनश्रेष्ठं कृषिभूमौ रसायनम् ।
नानारोगहरं पूतं गोमयञ्चाऽस्ति भैषजम् ॥

(२९)

पूर्णतः पालनीया च गोमाता सुभगा सदा ।
अर्चनीया महाभागैर्वेदमन्त्रैस्तथा बुधैः ॥

(३०)

ईदृशी गौर्महामाता वरदा तापनाशिनी ।
वर्णिता सर्वशास्त्रेषु शुद्धरूपा पयस्विनी ॥

(३१)

श्रुति–पुराण–तन्त्रेषु वर्णिताऽस्ति महीयसी ।
सौरभेयी समाराध्या निर्जरनिकरैः सदा ॥

जिसका उत्तम गोबर पवित्र और चर्म रोग का विनाश करने वाला है । अपस्मार (मृगी-व्याधि) महाव्याधि को दूर करने वाला तथा अपने मङ्गलमय गृह प्राङ्गण को विलेपन द्वारा सुशोभित और पावन बना देता है ॥२७॥

जो गोबर खाद के रूप में कृषि में प्रयोग किये जाने पर रसायन रूप अन्न के उत्पादन में परम उत्कृष्ट है, विविध रोगों को दूर करने वाला पवित्रतम दिव्यौषधि रूप अत्यन्त उपादेय है ॥२८॥

यह गोमाता सदा ही सर्वविध रूप से परिपालनीय है जिसका मङ्गल दर्शन अति कमनीय सुभग स्वरूप है । जो परम महाभाग उत्तमश्लोक पुरुषों द्वारा वैदिक मन्त्रों, महामनीषीजनों द्वारा समर्चनीय वन्दनीय है ॥२९॥

आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक इन त्रिविध तापों का परिशमन करने वाली ऐसी पयस्विनी गोमाता इच्छित वर की प्रदाता, निखिल शास्त्रों में जिसका साङ्गोपाङ्ग वर्णन है शुद्ध स्वरूप महामाता सर्वदा प्रपूज्य है ॥३०॥

वेद-पुराण-तन्त्रादि शास्त्रों एवं विधि-शिव-पुरन्दर-किन्नर-गन्धर्वादि सुरवृन्दों द्वारा सम्यक् प्रकार से आराधनीय सौरभेयी--श्रीगोमाता महनीय रूप से निरन्तर अभिवर्णित है ॥३१॥

(३२)

नन्दनन्दनकृष्णेन व्रजे वृन्दावने प्रिये ।
यमुनापुलिने रम्ये गोमाता परिचारिता ॥

(३३)

एतादृशी महाश्रेष्ठा सर्वलोकोपकारिणी ।
आराध्या पूज्यगोमाता हन्यते हन्त! भारते ॥

(३४)

बहुसंख्यकरूपेण गोहिंसा सम्प्रजायते ।
प्रत्यहं गर्ह्यरूपेण हिंसेयमवलोक्यते ॥

(३५)

श्रुत्वैव क्लिश्यते चेतो गोहत्येयं प्रजायते ।
चित्रमाभाति देशेऽस्मिन्स्वतन्त्रभारते कथम् ? ॥

व्रजवन के गोचारण प्रसङ्ग में कदम्ब वृक्ष पर वंशी बजाते हुए भगवान् श्रीश्यामसुन्दर,
वंशी ध्वनी से आकृष्ट गोप-गाय-खग-मृगादिक

व्रजधाम में परम शोभायमान श्रीवृन्दावन में यमुना के अति सुरम्य सुभग पुलिन पर वृन्दावनविहारी परमानन्दकन्द नन्दनन्दन जगन्नियन्ता परात्पर पूर्णतम रसब्रह्म सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण ने कोटि-कोटि गोवृन्द को गोप वेष में उनको चराने की अनुपम सेवा से गो महिमा का जो उच्चतम स्वरूप प्रकट किया वस्तुतः परम महिमामय है ॥३२॥

एवंविध गुण विशिष्ट सकलजन उपकारक परमोत्तम जो सर्वविधा आराध्या है वह सर्वतोभावेन परिपूज्य श्रीगोमाता जिसका अपने ही देश में असंख्य रूप में हनन किया जा रहा है वस्तुतः यह अत्यन्त कष्टप्रद प्रसङ्ग है ॥३३॥

दैनिक अत्यन्त निन्दनीय रूप में बहुसंख्यात्मक यह गोवध यहाँ हो रहा है, ऐसी हृदय विदारक घोर हिंसा अपने देश में देखी जा रही है जो अकल्पनीय महाक्रूर कर्म है ॥३४॥

धर्मप्राण भारतवर्ष की सुपावन धरा पर गोहत्या जैसे जघन्यतम दुष्कृत्य को सुनकर चित्त में अवर्णनीय वेदना है और विस्मय यह और है कि देश के स्वतन्त्र होने पर भी यह दुष्कृत्य और भी अधिक रूप में प्रचलित है, यह विधि की कैसी विडम्बना है साश्चर्य हृदय व्यथित होता है और पुनः पुनः मन में यही विचार आता है ऐसे पवित्र भारत में ऐसा घोर अनर्थ क्यों हो रहा है ॥३५॥

(३६)

पिपीलिकाऽपि संरक्ष्या यस्य देशस्य संस्कृतिः ।
तत्र गोवृन्दसंहारं श्रुत्वा दन्दह्यते मनः ॥

(३७)

गान्धीमहात्मना प्रोक्तं स्वतन्त्रेऽप्यत्र भारते ।
गोवधो गर्ह्य एवाऽसौ निरोध्यो देशशासकैः ॥

(३८)

स्वतन्त्रे भारते जाते गोवधकर्म सन्ततम् ।
प्रचुरं जायते घोरं स्वदेशाऽहितकारकम् ॥

(३९)

यवनशासने काले ब्रिटिशशासने च यत् ।
आसीज्जघन्यकर्माऽत्र ततस्तीव्रं प्रजायते ॥

जिस भारत की सर्वोत्कृष्ट सुपावन धरित्री पर भारतीय सनातन संस्कृति में चेंटी जैसे सूक्ष्म प्राणि की भी सावधानी पूर्वक रक्षा का ध्यान रखा जाता है जिसमें किसी भी प्रकार का सन्देह नहीं वहाँ इस भारत भूमि पर गो समूह का संहार हो रहा है जो अत्यन्त घोर दुष्ट-कर्म है जिससे राष्ट्र की विविध विधाओं से हानि स्वाभाविक है ॥३६॥

भारत को स्वतन्त्र कराने में जिनकी सर्वोत्तम भूमिका एवं महान् बलिदान जिस महापुरुष का रहा वे थे श्रीमहात्मा गाँधी जिन्होंने अपने यह भाव व्यक्त किये थे कि भारत के स्वतन्त्र होते ही सर्वप्रथम गो-हत्या का तत्काल निरोध किया जायेगा, किन्तु अत्यन्त सन्ताप है कि उनके उद्घोष का परिपालन दूर रहा प्रत्युत और भी अधिक मात्रा में यह महाकष्टदायक क्रूर कर्म अनवरत सञ्चालित है ॥३७॥

स्वतन्त्र भारत में अत्यन्त निन्दनीय गोवध कर्म निरन्तर चल रहा है जो निश्चय ही नितान्त रूपेण यह घोर कृत्य है और अपने ही देश के लिये अतीव घातक है, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, युद्ध, दुर्घटनायें, भूकम्प, दुष्काल, महामारी आदि उत्पातों का होना स्वाभाविक है ॥३८॥

यवन शासन काल में एवं ब्रिटिश शासन काल में इतनी मात्रा में गोवध नहीं होता था किन्तु व्यथा यह है कि आज भारत की स्वयं सत्ता अपने हाथों में होने पर भी उस काल से भी अत्यधिक मात्रा में वर्तमान यह क्रूर कर्म यहाँ हो रहा है जो परम घातक और भारतवासियों के लिये बहुत ही चिन्ता का विषय है ॥३९

(४०)

स्वार्थान्धनिरता ये च नैव शोचन्त्यघे रताः ।
गोहत्याघोरकृत्यं ते देशे कुर्वन्त्यनारतम् ॥

(४१)

अहो चेखिद्यते चेतः श्रावं श्रावञ्च गोवधम् ।
सर्वेश्वरः ! कृपाकोषः ! कथं गोघ्नानुपेक्षसे ? ॥

(४२)

किमतोप्यधिकं घोरं कृत्यमीप्ससि माधव ! ।
कथन्न शंखनादेन विद्रावयसि दुर्जनान् ॥

(४३)

पवित्रे भारते राष्ट्रे महाऽनर्थोऽयमीदृशः ।
प्रत्यहं जायते क्रूरो गोवधोहृद्विदारकः ॥

जो लोग स्वार्थ लिप्सा में अन्धे बने हुए हैं पाप परायण हैं वे कभी भी अपने मानस में लेश मात्र भी चिन्ता नहीं करते वे अबाध गति से गोहत्या जैसे महाघोर कृत्य को करने में अनवरत इस पवित्र भारत भूमि पर लगे ही रहते है, वस्तुतः यह प्रसङ्ग हृदय को विदीर्ण करने वाला है ॥४०॥

अत्यन्त कष्ट का यह प्रसङ्ग है, गोवध के दुःखद संवाद को सुन सुनकर यह चित्त नितान्त क्लेश का अनुभव करता है । अनन्तकृपाकोष सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण इन हत्यारों पर क्यों नहीं कोप करते हैं, सर्वज्ञ श्रीहरि किस प्रतीक्षा की चिन्ता में मग्न हैं ॥४१॥

क्या ? इससे भी अधिकतम घोर कृत्य देखने की प्रतीक्षा में अवस्थित हैं वे सर्वद्रष्टा अकारणकरुणार्णव श्रीमाधव, मधुसूदन, भगवान् श्रीकृष्ण, क्यों ! नहीं अपने पाञ्चजन्य की घोर ध्वनि करके इन अपराधियों को सुदर्शन चक्रराज से इनका संहार कर देते ॥४२॥

परम पवित्रतम भारतवर्ष की श्रेष्ठ भूमि पर गोवध जैसा महाअनर्थकारी अत्यन्त घातक अत्यन्त क्रूर कर्म सतत हो रहा है । ऐसा अति रोमाञ्चकारी बीभत्स कृत्य महनीय कष्टदायक है ॥४३॥

(४४)

प्राग्गोहत्यानिरोधाय सद्भिः सत्याग्रहः कृतः ।
ततोऽपि देशनेतारो मौनमाकलयन्ति ते ।।

(४५)

नाऽनुभवन्ति कष्टं ते वराकाः कूटभाषिणः ।
स्वयं सुखमवाप्यऽन्धाः सञ्जाताश्च मदान्विताः।।

(४६)

करपात्रमहाभागैर्यथेष्टं योजना कृता ।
पुरीस्थशङ्कराचार्यैः प्रयासो विहितोऽपि तैः ।।

(४७)

गवां हत्याऽवरोधःस्याद्यथाऽऽयोजनमाश्रितम् ।
आचार्यवर्यसद्भिश्च गोभक्तै र्धर्मतत्परैः ।।

गोहत्या निरोध के लिये अगणित सन्त-महात्माओं, धर्माचार्यों, महन्त-मण्डलेश्वरों, महामण्डलेश्वरों, भारत की अपार गोभक्त जनता ने सत्याग्रह आन्दोलन, विराट् प्रदर्शन किया, तब भी देश के शीर्षस्थ हमारे कहे जाने वाले नेतागण ने केवल मौन का अवलम्ब नहीं किया अपितु उन समस्त असंख्य गोभक्तों पर लाठी प्रहार, अश्रुगैश, गोलीकाण्ड करके सहस्रों गोभक्तों का संहार किया । यह आसुरी घोर कृत्य आज भी हृदय पटल पर यथावत् अवस्थित है ॥४४॥

ऐसे क्रूर कर्म परायण देश के प्रशासक लेश मात्र भी कष्ट का अनुभव नहीं करते । वे कूटभाषी स्वयं भौतिक सुख से लाभान्वित होकर मदान्ध बने हुए हैं । यह कितना दुःखद प्रसङ्ग है ॥४५॥

धर्म सम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज, जगद्गुरु शंकराचार्य श्रीनिरञ्जनदेवतीर्थजी महाराज,-गोवर्धनपीठाधीश्वर-पुरी, जगद्गुरु शंकराचार्य श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराज-ज्योतिष्पीठाधीश्वर-वदरिकाश्रम श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी (वृन्दावन) श्रीरामचन्द्रजी वीर-वैराट (राज.) आदि धर्माचार्यों-सन्तों, गोभक्तों ने गोवध निरोधार्थ सत्याग्रह-आन्दोलन-प्रदर्शन-अनशन आदि-आदि विविध विधाओं से जो प्रयास किया वह निश्चय ही वर्णनातीत है ॥४६॥

गोहत्या अवरोध के लिये धर्माचार्यों, महात्माओं, धर्मपरायण गोभक्तों ने जो अभूतपूर्व आयोजन किया वस्तुतः वह अत्यन्त विलक्षण अवर्णनीय था । तथापि प्रशासक सुषुप्ति में ही अवस्थित रहे ॥४७॥

(४८)

अधुनाऽपि गवां भक्ता धार्मिकाः दृढनिष्ठया ।
गोहत्याप्रतिरोधाय संलग्नाः भान्ति भारते ॥

(४९)

साश्चर्यं प्रोच्यते यत्र तीर्थानि विविधानि वै ।
विपुलो गोवधस्तत्र व्यर्थं मानवजीवनम् ॥

(५०)

अतो हि सकलैः सद्भिर्महात्म - मण्डलेश्वरैः ।
धर्माचार्यैस्तथा धीरैर्यतनीयं मुहुर्मुहुः ॥

(५१)

अत्रत्यैर्देशवास्तव्यैर्धार्मिकैर्धेनुसेवकैः ।
गोहत्याशमनार्थश्च यतनीयं प्रयत्नतः ॥

(५२)

व्यवसायरतैः सर्वैः श्रेष्ठिवर्यैश्च सर्वतः ।
गवां हत्यावरोधार्थं यतनीयं दृढात्मभिः ॥

(५३)

नार्यश्च बालका वृद्धा युवकाः कर्मतत्पराः ।
भवेयु कृतसङ्कल्पाश्चेत्साफल्यं स्यात्सुनिश्चितम् ॥

अभी भी धार्मिक गोभक्त गोहत्या-प्रतिरोध के लिये अनवरत समग्र विधा संलग्न हैं । जिस प्रकार बने अपने पावन प्रयास में सर्वतोभावेन मनसा, वाचा, कर्मणा लगे हुए हैं ॥४८॥

अत्यन्त आश्चर्य के साथ यह व्यक्त किया जाता है कि जिस भारत की अतिशय पवित्र धरा पर जहाँ अनेक धाम और कोटि-कोटि तीर्थ स्थल है ऐसे परम वरेण्य देश में विपुल रूप में गोवध हो रहा है अतः यह मानव जीवन पूर्णतः व्यर्थ रूप ही कहा जा सकता है ॥४९॥

अतएव समस्त धर्माचार्यों, सन्त-महात्माओं, महन्त-मण्डलेश्वरों, महामण्डलेश्वरों, विद्वज्जनों को गोवध निवारणार्थ बार-बार प्रयत्न करते ही रहना चाहिये ॥५०॥

भारतवासियों गो सेवक धार्मिक भक्तों को गोहत्या निरोध के लिये पूरे प्रयत्न के साथ अविराम रूप से इसमें सतत लगे ही रहना नितान्त अभीष्ट है ॥५१॥

व्यवसाय (व्यापार) परायण उद्योगपति श्रेष्ठी महानुभावों को तथा दृढव्रती गोभक्तों को गोहत्या अवरोध के लिये गोरक्षा हेतु मनसा, वाचा, कर्मणा, तन, मन, धनादि सम्पूर्ण विधाओं से अनवरत सन्नद्ध रहना परम अनिवार्य है ॥५२॥

आबालवृद्धवनिता अर्थात् बालक, युवक, वृद्ध एवं नारी समुदाय जो भी अपने कार्यों में लगे हुए हैं उन सभी को कृत संकल्प होना चाहिये जिससे गोमाता की सर्वप्रकार से रक्षा हो सके, निश्चय ही समवेत रूप से किया गया प्रयत्न अवश्य ही सफल होगा ॥५३॥

(५४)

गोमांसभक्षितोषाय द्रव्योपार्जनहेतवे ।
गोहत्या जायते नित्यं महापाप-प्रयोजिका ॥

(५५)

पाश्चात्यराष्ट्रदेशेषु बहुरूपेण प्रत्यहम् ।
स्वीयदेशाच्च गोमांसं-निर्यातीतिमहानद्यः ॥

(५६)

कीदृशी स्वार्थलिप्साऽस्ति? कुत्सितं कर्म कीदृशम्?।
कीदृशी ? भावना तेषां यत्ते गोवधतत्पराः ॥

(५७)

आधुनिकैस्त्तडिद्यन्त्रैः पीड्यमानाश्च गोव्रजाः ।
अत्युष्णवारिधाराभिर्गोहत्याऽत्र विधीयते ॥

(५८)

गर्भपातक्रिया गर्ह्या जघन्या कष्टदायिनी ।
यन्त्रैर्विधाय पश्चाच्च गोवधं ते प्रकुर्वते ॥

(५९)

एवं नानाविधैर्यन्त्रैः हिंसाकर्मपरायणाः ।
वधयन्त्रालये क्रूरा निघ्नन्ति वधिकाश्च गाः ॥

गोमांसाहारी नराधमों को प्रसन्न करने के लिये और अर्थ लाभ हेतु इस गोहत्या का महापाप किया जाता है यही इसका मूल प्रयोजन स्पष्टतया परिलक्षित है ॥५४॥

पाश्चात्य पर राष्ट्रों में अत्यधिक मात्रा में अपने देश से प्रतिदिन गोमांस का निर्यात होता है जो अत्यन्त घृणित एवं निन्दनीय कार्य है, जिसका मूल कारण है गोहत्या ॥५५॥

स्वार्थपरता का यह कैसा बीभत्स और कुत्सित कार्य है कैसी जिनकी यह दुर्भावना है कैसी विचित्र विडम्बना है जिसके परिणाम स्वरूप ये लोग निरन्तर गोवध कराने में तत्पर रहते हैं ॥५६॥

अत्याधुनिक बिजली से सञ्चालित संयन्त्रों द्वारा गोमाताओं को भीषण पीड़ा पहुँचाई जाती है और खोलते हुए अत्यन्त गरम जल की धारा उनके शरीर पर छोड़-छोड़ कर उन्हें अकल्पनीय महाकष्ट पहुँचा कर उनकी हत्या की जाती है जो अतीव घोर महापाप पूर्ण अत्याचार किया जाता है ॥५७

गर्भवती गोमाता को विद्युत्-यन्त्रों द्वारा घोर जघन्य भयङ्कर पीड़ा पहुँचा कर उनका गर्भपात कराया जाता है, पश्चात् उसी क्षण गोवत्स के चर्म को खेंच लिया जाता है, साथ ही उस गोमाता का तत्काल वध कर देते हैं जो इतना भयावह कुत्सित कर्म है ॥५८॥

इस प्रकार अतिक्रूरकर्मा वधिक लोग पशुवध-यन्त्रालय में नाना प्रकार से यन्त्रों द्वारा उन गोमाताओं का बड़ी क्रूरता पूर्वक असह्य बध करते हैं जो अत्यन्त घातक विनाशक है ॥५९॥

(६०)

असीमाऽसंख्यरूपेण गोवधः प्रत्यहं भुवि ।
जायते भारते देशे महाकष्टावहः प्रभो ! ॥

(६१)

बीभत्सकुत्सितक्रूर – दृश्याऽभिवर्णनेऽक्षमाः ।
सर्वेश्वर ! कृपासिन्धो ! गोहिंसा सम्प्रजायते ॥

(६२)

हे दयालो ! कृपाधाम ! गोपरिपालने रतः ! ।
तत्कथं करुणानाथ ! गोरक्षा न विधीयते ॥

(६३)

व्रजे गोवर्धने रम्ये पूज्या गावो हि चारिताः ।
सा स्मृति र्विस्मृता नाथ ! कथन्न स्मर्यतेऽधुना ॥

हे प्रभो ! इस जगत् में भारत की पुण्यमयी भूमि पर असीम असंख्य रूप में प्रतिदिन गोवध होता है जो महाकष्ट-दायक है जिसका वर्णन भी अशक्य है ॥६०॥

हे कृपासिन्धो ! हे सर्वेश्वर ! यह गोहिंसा का अतीव गर्ह्य कुत्सित क्रूर दृश्य है जिसके वर्णन करने में सर्वथा असमर्थ हैं । वाणी और लेखनी अवरुद्ध हो जाती है ॥६१॥

हे दयालो ! हे कृपाधाम ! हे करुणानाथ ! हे गोपालन-परायण ! हे गापाल ! आप अपनी ही इस गोमाता पर हो रहे अत्याचार, इस घोर संहार को कैसे सह रहे हैं गोरक्षा क्यों नहीं करते । हे नाथ ! आप कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं सर्वसमर्थ होते हुए भी अपने श्रीमद्भगवद्गीता के **परित्राणाय साधूनाम्.** इस वचन को स्मरण क्यों नहीं करते । इसी प्रकार **गो-ब्राह्मण हिताय च** अपने इस स्वरूप को भी क्या आपने भुला दिया । हे दयार्णव ! विलम्ब न करें अविलम्ब इस महाविनाशकारी कृत्य का तत्काल परिहार करें ॥६२॥

हे हरे ! व्रज में सुरम्य गिरिराज श्रीगोवर्धन पर्वत की पावन रमणीय उपत्यकाओं में आपने गोचारण लीला की है, क्या ? उस स्मृति को आपने विस्मृति के रूप में परिवर्तित कर दिया है । क्यों नहीं उन गोमाताओं का चिन्तन-स्मरण करते ॥६३॥

(६४)

नन्दनन्दन ! गोविन्द ! श्रीकृष्ण ! करुणानिधे !।
वेणुमादाय चक्रञ्च समागच्छ व्रजावनौ ॥

(६५)

श्रीसुदर्शनचक्रेण हत्वा गोघातकान्द्रुतम् ।
पवित्रे भारते देशे – प्राकट्यं कुरु माधव ! ॥

(६६)

कामधेनुश्च गोमाता सेवया मोक्षदा शुभा ।
साऽद्य संकटमापन्ना विधेहि द्रागनुग्रहम् ॥

(६७)

यस्या निर्जर–गन्धर्वा गायन्ति सुयशः सदा ।
सा गौःसंकटमापन्ना कीदृशीयं विडम्बना ? ॥

(६८)

श्रुति–स्मृति–पुराणादि–तन्त्रग्रन्थाश्च पूर्णतः ।
यन्माहात्म्यं प्रगायन्ति साऽऽप्नोति क्लेशमत्र गौः ॥

हे नन्दनन्दन ! हे गोविन्द ! हे करुणानिधे ! हे श्रीकृष्ण ! वंशी वादन करते हुए श्रीसुदर्शन चक्रराज को अपने मञ्जुल करकमलाङ्गुलि में धारण कर व्रज धरा की सुमञ्जुल कुञ्जों में अविलम्ब पधार कर गोमाता की समग्रविधा सुरक्षा करें ॥६४॥

हे माधव ! आपकी इस भारत भूमि पर शीघ्र ही अवतार धारण करें, हे हरे ! अपने चक्रराज श्रीसुदर्शन से गोघातकों का संहार करें जिससे कामधेनु स्वरूपा इस गोमाता की रक्षा संभव हो ॥६५॥

कामधेनु रूप गोमाता संसार से मुक्ति देने वाली परम कल्याणमयी है, वही गोमाता आज भीषण संकटापन्न अवस्था में क्लेश का अनुभव करती है, कृपानाथ ! अत्यन्त शीघ्र ही अपना वरद मङ्गल अनुग्रह करें ॥६६॥

जिस गोमाता की देव-गन्धर्वादि सुरवृन्द उसके सुन्दर सुयशो गान करते हैं । वह गोमाता आज असीम कष्ट से अभिव्याप्त है यह कैसी विचित्र विडम्बना है ॥६७॥

श्रुति-स्मृति-सूत्र-तन्त्र-पुराणादि यावन्निखिल शास्त्र जिसके माहात्म्य का प्रगायन करते हैं वह गोमाता इस भारत की मङ्गल वसुन्धरा पर असीम क्लेश को प्राप्त हो रही है ॥६८

(६९)

अहो दन्दह्यते चेतो गोकष्टमवलोक्य नः ।
गोविन्द ! दर्शनं देहि, त्वरितं कृपया भुवि ॥

(७०)

पौनःपुन्येन सर्वेषां प्रार्थना विनिवेद्यते ।
गोरक्षार्थं सुवेगेन विदधातु कृपां प्रभो ! ॥

(७१)

तव पदारविन्देषु भूयोभूयो निवेदनम् ।
गोवधस्य निरोधार्थं सर्वं विहाय पश्यतु ॥

(७२)

हे सर्वेश्वर ! गोविन्द ! हे गोपाल ! व्रजेश्वर ! ।
पाहि पाहि सदा पाहि गोरक्षां विदधातु नः ॥

यह अत्यन्त खेद का विषय है, अपना चित्त गोमाता की इस असह्य कष्टावस्था को देखकर पुनः पुनः अतिशय संतप्त हो रहा है, हे गोविन्द ! आप अपनी अनुकम्पामयी दृष्टि-पात करके प्रत्यक्ष प्रकट दर्शन प्रदान किजीये जिससे परम व्यथित इस गोधन की रक्षा हो सके ॥६९॥

हे करुणार्णव प्रभो ! निखिल धार्मिक परम भागवत भगवद्भक्तों का श्रीमच्चरणसररुहों में निवेदन पूर्वक पुनः पुनः प्रार्थना है, हे हरे ! गोरक्षार्थ अत्यन्त शीघ्र ही अपनी अहैतुकी कृपा की दिव्य वृष्टि करें जिससे हे कृपासिन्धो ! यह गोमाता सर्वाङ्गीण रूपेण निर्विघ्नतया इस धरा धाम पर अपने मनोहर दिव्य दर्शन से सबको कृतार्थ करे ॥७०॥

हे सर्वेश्वर ! हे सर्वज्ञ ! यह बारम्बार निवेदन के साथ अभ्यर्थना आपके श्रीपदारविन्दों में समर्पित है । अपने यावन्मात्र समस्त प्रसङ्गों का विराम कर गोवध के परिहार हेतु अपनी कृपामयी दृष्टि करें, हे नाथ ! स्वतः सभी विषम समस्याओं का समाधान हो जायेगा ॥७१॥

हे सर्वेश्वर ! हे गोविन्द ! हे गोपाल ! हे व्रजेश्वर ! हमारी इन गोमाताओं की रक्षा करने का अपना मङ्गलमय अनुग्रह करें । हे भगवन् ! रक्षा करें, रक्षा करें, रक्षा करें ॥७२॥

(७३)

यात्राकाले तथा मार्गे यदि गोदर्शनं भवेत् ।
दक्षिणाङ्गेन गन्तव्यमिति शास्त्रीयपद्धतिः ॥

(७४)

गोदानं फलदं दिव्यं स्वर्गादिलोकसम्प्रदम् ।
इहलोके परत्राऽपि श्रीप्रदं मङ्गलावहम् ॥

(७५)

पुराकाले नरेन्द्राश्च कोटिगोदानतत्पराः ।
आसँस्ते दानशीलाग्र्याः तपोदानपरायणाः ॥

(७६)

अद्याऽपि धर्मतत्त्वज्ञा भावुकाः श्रद्धयान्विताः ।
समाचरन्ति गोदानं लभन्ते दुर्लभं सुखम् ॥

(७७)

कार्तिके शुक्लपक्षे च गोपाष्टम्यां महातिथौ ।
गोसम्पूजनमाहात्म्यमद्भुतं　मङ्गलप्रदम् ॥

यात्रा के अवसर पर अथवा जब कभी भी मार्ग में यदि गोमाता का सुभग दर्शन हो जाय तो उसको अपनी दाहिनी ओर करके ही आगे बढना चाहिये, वाम भाग करके जाने पर अमंगल होता है अतः इसका सर्वदा सावधानी पूर्वक ध्यान रखना चाहिये । यह शास्त्र विहित सिद्धान्त है ।।७३ ।।

गोदान दिव्य फलप्रद है, स्वर्गादि ऊर्ध्व लोकों की प्राप्ति कराने वाला है । इस लोक में और परलोक में दिव्य मङ्गलदायक एवं दिव्य श्री अर्थात् शोभा परम शुभकारी कान्ति को देने वाला होता है अतएव गोदान सर्वोपरि है । गोदान करने वाला दिव्य लोक में परमानन्द को प्राप्त करता है ।।७४ ।।

प्राचीन समय में बड़े-बड़े नरेन्द्र कोटि-कोटि गोदान किया करते थे । वे नराधिप तपोदान परायण गोदानशील और उत्तम विचारवान् प्रजापालक होते थे । उनके शासन काल में सर्वत्र आनन्द ही आनन्द परिव्याप्त रहता था ।।७५ ।।

आज वर्तमान में भी धर्म के रहस्य को जानने वाले परम भावुक श्रद्धावान् जन यथाशक्ति निष्ठापूर्वक गोदान करते हैं और अवश्य ही उत्तम सुख पूर्वक परम शान्ति और आनन्द का अनुभव करते हैं ।।७६ ।।

अतिशय पुण्यतम मास कार्तिक शुक्ल पक्ष में गोपाष्टमी महातिथि के शुभ दिवस गो-पूजन का अद्भुत माहात्म्य है, वह अत्यन्त मङ्गलदायक परमानन्दप्रद है । उस पवित्र पर्व पर गो-माता का विधिवत् पूजन अवश्य ही सश्रद्ध करना चाहिये ।।७७

(७८)

गोपाष्टमीदिने विद्याऽऽरम्भः पूर्णफलप्रदः ।
महापर्वात्मकः श्रेष्ठो दिवसः सात्विकः स्मृतः ॥

(७९)

श्रीमत्सर्वेश्वरः कृष्णो व्रजगोष्ठे गवां पयः ।
स्वयमास्वाद्य गोपाग्र्यान्पयसा परिषिञ्चति ॥

(८०)

गोनवनीतचौरश्च यशोदानन्दनः प्रभुः ।
नवनीतं गृहीत्वाऽऽशु गोपीगेहात्प्रधावति ॥

(८१)

गोधनं परमं श्रेष्ठं गोऽर्चनं परमं वरम् ।
गोमध्ये सततं वासः कृष्णचन्द्रविहारिणः ॥

(८२)

विधि–शम्भु–सुरेन्द्राद्या नित्यमीप्सन्ति दर्शनम् ।
क्रीडतो व्रजगोमध्ये कृष्णस्य वेणुधारिणः ॥

गोपाष्टमी का पुण्यमय दिवस महापर्व के रूप में परम सात्विक और श्रेष्ठतम है । इस महापर्व के दिवस बालकों के विद्यारम्भ का अतिशय उत्तम पूर्णफलदायी अवसर है। (भगवान् श्रीकृष्ण ने इसी पावन दिन गोचारण के मुहूर्त का शुभारम्भ मुनिवर श्रीगर्गाचार्यजी के द्वारा किया था । किसी उत्तम कार्य के शुभारम्भ के लिये यह अवसर सर्वश्रेष्ठ है) ॥७८॥

अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायक, व्रजेन्द्रनन्दन, सर्वेश्वर श्रीकृष्ण व्रजगोष्ठ में पद्मगन्धा, कामधेनु, योजनगन्धा आदि विविध गो-समूह का सुन्दर अमृत रूप धवल दुग्ध का स्वयं आस्वादन लेकर समस्त व्रजगोपमण्डल को उस दिव्य दुग्ध से परितृप्त कर देते हैं ॥७९॥

यशोदानन्दन व्रजवल्लभ भगवान् श्रीकृष्ण गो-माखन चोर हैं वे व्रजगोपीजनों के मङ्गलमय गृह से माखन चुरा कर अत्यन्त वेग से तत्काल शीघ्रगामी होकर अपने गोप सखाओं के निकट पहुँचने के लिये परम आतुर हैं ॥८०॥

व्रज-वृन्दावनविहारी भगवान् श्रीकृष्ण को गोधन सर्वश्रेष्ठ प्रिय है, गो पूजन भी अतिशय आनन्दप्रद है, गो-समूह के मध्य निरन्तर निवास से श्रीहरि सर्वदा पुलकित रहते हैं ॥८१॥

व्रज गोयूथ के मध्य वंशी विभूषित व्रज गोप सखा संग विविध ललित लीला निरत व्रजेश्वर श्रीकृष्ण के परम मनोहारी अति दुर्लभ दर्शन हेतु ब्रह्मा-शंकर-इन्द्रादि देवगण अविरल रूप से अभिलाषा लिये हुए अत्यन्त व्याकुल रहते हैं ॥८२॥

(८३)

नीपच्छाये महारम्ये कालिन्द्याः कूलसन्निधौ ।
गोवत्स–गोपमध्ये ऽहं कामये कृष्णदर्शनम् ॥

(८४)

महाराजदिलीपेन गोसेवा प्रतिपादिता ।
सिद्धकामो महाराजो बभूवाऽत्र दृढव्रती ॥

(८५)

पुराऽनेके महाराजा अभवन्भुवि भारते ।
ये हि श्रद्धालवो भक्ता अनन्या धेनुपालकाः ॥

(८६)

गोक्षीररसेवनं श्रेष्ठं परमं बलवर्धनम् ।
आयुर्वेदे गुणा उक्ता विविधा भावगर्भिताः ॥

यमुना तट निकट कदम्ब की अतिरमणीय शीतल सुखद छाया में गोवत्स एवं गोप सखा मण्डल मध्य सुन्दर शोभायमान निखिलभुवनमोहन भगवान् श्रीकृष्ण के मधुर मनोहर दर्शन की उत्कट उत्कण्ठा परम भागवत भगवज्जन प्रतिपल करते हैं ॥८३॥

महाराज दिलीप ने गो सेवा का जो आदर्श प्रकट किया वह अक्षुण्ण रूप से सदा सर्वदा कोटि-कोटि जन मानस और सम्पूर्ण साहित्य कोष में विद्यमान रहेगा । वे महाराज सिद्धकाम कितने गो-सेवा दृढ़व्रती थे इस भूतल पर ऐसा उदाहरण मिलना दुर्लभ है ॥८४॥

भारत की सुपावन वसुन्धरा पर और भी ऐसे अनेक उत्तमोत्तम नराधिप राजा हुए हैं जो अनन्य भाव से गोपालन में गोदान में गोभक्ति में अग्रगण्य निष्ठावान् रहे हैं । (यह गोमाता भारतीय अनादि वैदिक सनातन संस्कृति की मूल आधार भित्ति एवं पूर्ण प्रतीक स्वरूप है ॥८५॥

गोदुग्ध सेवन बहुत ही श्रेष्ठ है, तत्काल बलवर्द्धक तो है ही । आयुर्वेद में बड़े ही भावपूर्ण नानाविध गुण वर्णित किये गये है । (गोदुग्ध से अनेक पदार्थ निर्मित होते हैं, इसी से दधि, नवनीत, (माखन) प्राप्त होता है । गोदुग्ध की अनुपम महिमा है, जितना भी विश्लेषण किया जाय स्वल्प है ॥८६॥

(८७)

गोघृतप्लुतपक्वान्न – सेवनं हितकारकम् ।
रसायनं सुधारूपं पावनं परमं वरम् ॥

(८८)

एषोक्तिः शास्त्रविख्याता तक्रं शक्रस्य दुर्लभम् ।
सुरभि-तक्रवैशिष्ट्यमनयैव विबोध्यते ॥

(८९)

अद्यत्वे भारते लोका ईदृशा विस्मयावहाः ।
यद्देहाद्द्राव उत्सृष्टा अटन्ति ता इतस्ततः ॥

(९०)

न क्वाऽपि महिषी-मेष-च्छागोष्ट्र-हय-गर्दभाः ।
मिलन्ति नगरेऽटन्तः परं गावो भ्रमन्ति नः ॥

(९१)

लोकानामीदृशीं चेष्टां दृष्ट्वा दन्दह्यते मनः ।
कथं गवां सुरक्षा स्यादिति ज्ञात्वाऽस्ति विस्मयः॥

गोघृत से सराबोर पक्वान्न सेवन अति हितकारी, रसायन रूप, अमृततुल्य परमोत्तम पवित्र और रुचिकर है । (शुद्ध गोघृत हृदय के लिये आरोग्य कारक सुखद है) ॥८७॥

तक्रं शक्रस्य दुर्लभम् यह शास्त्रीय उक्ति सर्वत्र प्रसिद्ध है । इससे गो-दधि-तक्र की बहुत बड़ी विशेषता है । इस शास्त्र कथित सदुक्ति से तक्र के स्वरूप का परिज्ञान होता है । वस्तुतः गोतक्र में उदर रोग निवारक अद्भुत शक्ति सन्निहित है ॥८८॥

आजकल अपने धर्मप्राण भारतवर्ष के ऐसे विलक्षण अनेक व्यक्ति हैं जो ऐसी महिमामयी गोमाता को अपने घर से बाहर छोड़ देते हैं वे गायें इधर-उधर ग्रामों-नगरों-वनों में असहाय रूप में निराहार के साथ संकटापन्न अवस्था में भटकती रहती हैं, यह अत्यन्त खेदास्पद प्रसङ्ग है ॥८९॥

कहीं भी भैंस-बकरी-ऊँट-घोड़ा-गदाह आदि मार्ग में नगरों, ग्रामों में भटकते नहीं मिलेंगे । इनकी लोग पालना करते हैं किन्तु गोपालन इनको दुष्कर हो रहा है । वे गायें जहाँ तहाँ कष्ट के साथ इधर-उधर घूम रही हैं ॥९०॥

अपने देश के ऐसे लोगों की दुर्वृत्ति देख कर हृदय व्यथित होता है । इस प्रकार अवहेलना करने पर गोमाता की किस प्रकार रक्षा संभव होगी । वस्तुतः यह जानकर अत्यन्त आश्चर्य हो रहा है ॥९१॥

(६२)

कपिला–पद्मगन्धादि–श्यामा–शुभ्राद्यनेकधाः ।
पवित्राः सुभगाः सन्ति या गावो विश्वमातरः ॥

(६३)

पाण्डवै रक्षिता गावो मुनिभिः समुपासिताः ।
राजर्षि–सेविता नित्यं विचरन्तीह निर्भयाः ॥

(६४)

सुरम्ये भारते देशे राजस्थाने विशेषतः ।
कृषकै रक्षिता गावो गौरवास्पदमित्यपि ॥

(६५)

देशस्थैः सकलैर्लोकैः पालनीयाश्च धेनवः ।
सततं परिसेव्यास्ताः श्रद्धया परिचर्यया ॥

(६६)

व्रजसद्भिः समाराध्या व्रजभक्तैश्च पूजिताः ।
व्रजगोपैश्च सम्पाल्या गावस्तिष्ठन्ति भूतले ॥

कपिला-पद्मगन्धा-श्यामा-शुभ्रा आदि विविध रूप गोमाता का है जो अति पवित्र अतिश्रेष्ठ समस्त विश्व की यह शीर्षस्थ जीवनदायिनी माता है । इसकी महिमा का वर्णन ही अशक्य है ॥६२॥

इस गोमाता की रक्षा पाँचों पाण्डवों ने बड़े-बड़े, वशिष्ठ-जमदग्नि-परशुराम आदि ऋषि-मुनीश्वरों ने दिलीप-रघु आदि राजर्षियों ने उनकी उपासना के साथ की है । और गोमातायें निरातङ्क निर्भीक होकर सानन्द विचरण करती थीं ॥६३॥

अतिशय सुरम्य भारत के राजस्थान प्रान्त में विशेष रूप से कृषक वर्ग द्वारा गोमाता की रक्षा एवं सर्वविध पालना होती रही है जो निश्चय ही अतीव गौरवपूर्ण यह विषय है ॥६४

समस्त श्रद्धावान् देशवासियों को गोपालन का गोरक्षा का उसकी सर्वतोभावेन श्रद्धापूर्वक सेवा का पावन व्रत लेना नितान्त अभीष्ट होना अत्यन्त आवश्यक है जिससे गोमाता की सुरक्षा संभव हो ॥६५॥

इस भारत धराधाम पर व्रज भूमि के श्रेष्ठ सन्तों व्रजस्थ भक्तों व्रज गोपजनों द्वारा गोमाता की सुन्दर रूप से सर्वविध सेवा-अर्चना होती रही है जिससे गोमाता का केन्द्र व्रजक्षेत्र महत्वपूर्ण है ॥६६॥

(९७)

विप्रैर्विप्रवरैः श्रेष्ठैर्नितरां रक्षिता मुहुः ।
कामधेनुस्वरूपास्ता गावः स्वस्था धरातले ॥

(९८)

हिन्द्वधिराज्यनेपाले गावः सन्ति सुरक्षिताः ।
तत्र कदापि गोहिंसा न भवतीति गौरवम् ॥

(९९)

नेपालसर्वकारस्य प्रावधानं महादृढम् ।
गोहिंसकं नरंशीघ्रं पूर्णतो दण्डयत्यसौ ॥

(१००)

यदि भारतराष्ट्रस्य प्रावधानं दृढं भवेत् ।
भवितुं नैव शक्नोति गोहिंसा भारते क्वचित्॥

(१०१)

समेषां मानसे तीव्रा समुत्कण्ठाऽवतिष्ठते ।
समग्रसदुपायैस्तु गोहिंसारोधनं भवेत् ॥

(१०२)

कोटि–कोटि–सुराणाञ्च निवासोऽस्ति गवां तनौ ।
तस्मादर्च्याः सदा गावः श्रुति–मन्त्रैश्च सस्वरैः ॥

भारत के श्रेष्ठ विप्रजनों द्वारा गोपालन पूर्णतया निरन्तर होता रहा है । ऐसी कामधेनु रूप गोमाता सदा ही यहाँ पर अत्यन्त स्वस्थ उत्तम और उल्लसित रही हैं ॥९७॥

वर्तमान में एकमात्र (हिन्दु-अधिराज्य)हिन्दु राष्ट्र नेपाल में गोमाता सर्वविध रूप से सुरक्षित है । वहाँ पर कभी भी गोहिंसा नहीं होती । यह परम गौरव तथा आदर्शपूर्ण विषय है ॥९८॥

नेपाल सरकार का ऐसा परम दृढतम प्रावधान (कानून) है कि यदि कोई कदाचित् गोवध का साहस करते हैं तो उसे अतिशय कठोरतम दण्ड देने का विधान है । अतः वहाँ गोवध की परिकल्पना ही नहीं ॥९९॥

इसी प्रकार भारत-सरकार का भी पूर्णतया अतिदृढ प्रावधान होना चाहिये जिससे अपने देश में लेशमात्र भी गोहत्या न हो । सम्पूर्ण गोवंश की पूर्णतः रक्षा हो कोई भी गोवंश की हानि न कर सके ॥१००॥

समस्त भारतवासियों की यह तीव्र उत्कण्ठा है कि सभी उपायों से गोहिंसा का सर्वथा निवारण हो जिससे अपने देश का यह महान् कलङ्क दूर हो सके ॥१०१॥

गोमाता के मङ्गलमय पावन अङ्ग में कोटि-कोटि देवताओं का निवास है, ऐसे परम वन्दनीय गोधन जिसके माहात्म्य का सस्वर श्रुति-मन्त्र अनवरत प्रगायन करते हैं । एवंविध गो का अपूर्व दिव्य स्वरूप सर्ववन्द्य है ॥१०२॥

(१०३)

पुनश्च प्रार्थये भक्त्या हे सर्वेश्वर ! माधव ! ।
गोहत्या ह्यवरुद्धा स्याद् गोमातॄ रक्षणं भवेत् ॥

(१०४)

तत्र गोष्ठे व्रजे गावो दिव्याऽऽभरणभूषिताः ।
सोल्लासं परितो नित्यं विचरन्ति मुदा सदा ॥

(१०५)

व्रजे वृन्दावने रम्ये कोटिगोयूथचारणम् ।
विधत्तेस्म सदा कृष्णः श्रीराधामाधवः प्रभुः ॥

(१०६)

कदम्बगहने कुञ्जे वेणुवेत्रधरो हरिः ।
विपिने गोषु गोविन्दो गोपैः सार्द्धं व्रजत्यहो ॥

(१०७)

परात्परपरब्रह्म भारतवर्षभूतले ।
गो-विप्र-भूहितार्थश्चप्रादुर्भवति माधवः ॥

हे सर्वेश्वर ! हे माधव ! भक्ति पूर्वक पुनः प्रार्थना श्रीयुगलचरणाविन्दों में प्रस्तुत है हे नाथ ! गोहत्या का शीघ्र ही अवरोध करके उस परम उपासक दयामयी गोमाता की रक्षा करने का अपना मङ्गलमय अनुग्रह करें ॥१०३॥

वहाँ व्रज के व्रजगोष्ठ में दिव्य-दिव्य अति सुभग नाना-विध आभूषणों से समलङ्कृत परम सुशोभित उल्लासपूर्ण हृदय से चारों ओर प्रतिदिन अत्यन्त अद्भुत गोमाता विलक्षण विचरण करके व्रज की शोभा बढा रही है ॥१०४॥

व्रज में वृन्दावन के कुञ्ज वनों में असंख्य गो समूह के साथ गोचारण लीला भगवान् राधामाधव श्रीकृष्ण सदा स्वयं करते हैं जो अतीव रसदायक यह अनुपम दर्शन है ॥१०५॥

वंशी को धारण किये हुए श्रीहरि भगवान् गोविन्द श्रीकृष्ण व्रज गोपजनों के संग गायों के मध्य वृन्दावन के सुरम्य वनोपवनों में विहरण विचरण करते इतने सुन्दर सुशोभित हो रहे हैं जो परम आश्चर्य जनक स्वरूप है । इस अति मञ्जुल शोभा का वर्णन अनिर्वचनीय है ॥१०६॥

पुराण पुरुषोत्तम परात्पर रस परब्रह्म भगवान् सर्वेश्वर माधव श्रीकृष्ण गोमाता और विप्रों के एवं गो स्वरूप इस पृथ्वी माता की रक्षार्थ ही समय-समय पर इस भारत की पवित्र धरा पर अवतरित होकर धर्म सुरक्षा करते हैं तथा निशाचरों का दमन करते हैं ॥१०७॥

(१०८)

व्रजकरीरकुञ्जेषु गोपालो गोगणे स्थितः ।
चकार भोजनं तत्र गोरजोरेणुरूषितः ॥

(१०९)

यमुनानीरमादाय दिव्यस्वर्णमये घटे ।
गवां पदाभिषेकञ्च विदधाति व्रजेश्वरः ॥

(११०)

जयोऽस्तु भारतस्येह जयोऽस्तु धेनुसम्पदः ।
जयोऽस्तु संस्कृतेर्हिन्दो र्जयोऽस्तु श्रीहरेः सदा॥

(१११)

शान्तिकान्तिप्रदं पूर्णं सकलागमवर्णितम् ।
ईदृशं गोधनं पूज्यं विद्वद्भिरस्त्युपासितम् ॥

(११२)

गोदानशील उत्कृष्टो गोपुच्छमवलम्ब्य यः ।
स दिव्यलोकमाप्नोति लभतेऽनन्तवैभवम् ॥

व्रज के करीर (कैर-टेंटी) के कुञ्जों में भगवान् गोपाल श्रीकृष्ण जो गोधूलि कणों से परम शोभायमान हैं, वे श्रीहरि अगणित गो-समूह के मध्य गोप सखाओं के साथ वन भोज कर सब को अमित आनन्द प्रदान करते हैं ॥१०८॥

नवजलधररुचिर व्रजेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण दिव्य सुवर्णमय कलश में यमुना का निर्मल जल पूरित करके गोमाता के पदपङ्कजों का मनोहर अभिषेक करके अनुपम आनन्द का अनुभव कर रहे हैं ॥१०९॥

भारतवर्ष की जय हो, गोमाता की जय हो, हिन्दु-संस्कृति की जय हो, जगन्नियन्ता सर्वेश्वर श्रीहरि भगवान् श्रीकृष्ण की सदा ही जय हो ॥११०॥

परम शान्ति और दिव्य कान्ति को देने वाला सम्पूर्ण आगमादि शास्त्रों में जिसका अद्भुत वर्णन है, उत्तमोत्तम विद्वज्जनों द्वारा जिसकी उपासना की जाती है ऐसा सदा सर्वदा पूज्य गोधन है जिसका स्वरूप अपार है ॥१११॥

जो भक्त श्रद्धापूर्वक गोदान में तत्पर है, वह इस पाञ्चभौतिक देह के त्याग करने पर गोपुच्छ का आश्रय पाकर परम दिव्य लोक को प्राप्त करता है और वहाँ दिव्याति-दिव्य अनन्त वैभव से परिपूर्ण होकर आनन्द का उपभोग करता है ॥११२॥

(११३)

गोऽर्चनं प्रत्यहं कार्यं श्रद्धया गोऽभिवन्दनम् ।
गोग्रासो दीयतां नित्यं गोसेवा च सुखावहा ॥

(११४)

गोसमं सुधनं नाऽस्ति गौर्गङ्गाधिकपावनी ।
पुंसां गोसदृशी माता नास्ति लोके शुभोत्तमा ॥

(११५)

गोपरिक्रमणं श्रेष्ठं गोध्यानं मङ्गलप्रदम् ।
गोदर्शनं सदा पुण्यं यात्राकाले विशेषतः ॥

(११६)

सेवया शीघ्रसन्तुष्टा वरदा मोक्षदायिनी ।
वन्दनीया सदा माता धेनुरूपा महीयसी ॥

(११७)

रोग – शोकहरा पूज्या सर्वपातकनाशिनी ।
गोमाता विश्वमाता च साऽऽराध्या वैष्णवोत्तमैः ॥

मो पूजन प्रतिदिन करना चाहिये और श्रद्धायुत हो गोमाता को प्रणाम करना आवश्यक है तथा नित्यप्रति गो-ग्रास देने का शास्त्रीय विधान है उसका पालन अवश्य हो । गो सेवा बहुत ही सुखप्रद है ॥११३॥

गो समान इस संसार में कोई सुन्दर धन नहीं है गोमाता श्रीगंगाजी से भी अधिक पावन है, गोमाता जैसी इस जगत् में कोई माता नहीं है, उसकी जैसी परम शुभ और उत्तम कोई भी वस्तु इस भूतल पर दृष्टिगत नहीं ॥११४॥

गोमाता की परिक्रमा अत्यन्त उत्तम है, उसका ध्यान भी अति हितकर है और गो दर्शन सर्वदा सुन्दर है, यदि यात्रा के अवसर पर गो दर्शन हो जाय तो बहुत ही शुभकारी है ॥११५

सेवा करने पर बहुत शीघ्र ही प्रसन्न हो जाती है, अभिलषित उत्तम मनोरथ को पूर्ण करने वाली, मोक्ष प्रदायक, गोमाता सदा ही अभिवन्दनीय है वह धेनु रूप अतीव महान् है ॥११६॥

संसार के समस्त रोग-शोक का निवारण करने वाली सर्वदा पूज्य है, सम्पूर्ण पापराशि का शमन करने में परम समर्थ गोमाता विश्वमाता है, उत्तम वैष्णव भक्तों को गोमाता की सदा आराधना, सेवा करना परम अभीष्ट है ॥११७॥

(११८)

इदं गोशतकं श्रेष्ठं गवां माहात्म्यदर्शकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

यह गोशतक परम लाभप्रद है और गो महिमा का गो माहात्म्य का द्योतक है जिसका प्रणयन गोमाता और गोपाल-विहारी भगवान् श्रीराधासर्वेश्वर की कृपा से हमें निमित्त बनाकर हुआ है जिससे गोभक्त इस लघु-ग्रन्थ से गोस्वरूप परिज्ञान में गोमाता में और अधिक निष्ठावान् बन सके ॥११८॥

*

❊ श्रीगोषोडशी ❊

(१)

संसारतापशमनां शुभकल्पवल्लीं
दारिद्र्यदुःखदमनां वरदां वेरण्याम् ।
हैयङ्गवीनरसदां व्रजधाम्नि रम्यां
ध्यायेम कृष्णरसदां व्रजधेनुरूपाम् ॥

(२)

स्वर्गप्रदां श्रुतिपुराणनिरूपिताञ्च
कृष्णप्रियां कलुषराशिहरां प्रसन्नाम् ।
सर्वार्थसिद्धिवरदां कमनीयरूपां
ध्यायेम कृष्णरसदां व्रजधेनुरूपाम् ॥

(३)

गव्यप्रदां हृदयशान्तिकरीं सदैव
गोविन्दवेणुरवमोदभरां प्रपूज्याम् ।
आनन्दवृष्टिनवसृष्टिकरीमुपास्यां
ध्यायेम कृष्णरसदां व्रजधेनुरूपाम् ॥

संसार के आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक इन त्रिविध तापों का परिशमन करने वाली, मङ्गलमयी कल्पलता स्वरूप दरिद्रता एवं नाना प्रकार के दुःखों का परिशमन कारक अभिलषित वर प्रदायक परम श्रेष्ठ, सुन्दर मधुर माखन को देने वाली, व्रजधाम में सदा सुशोभित परमानन्दकन्द नन्दनन्दन श्रीकृष्ण के अपरिमेय आनन्द को देने वाली ऐसी यह व्रजधेनु स्वरूप श्रीगोमाता उसका हम सर्वतोभावेन ध्यान करते हैं ॥१॥

स्वर्गादि ऊर्ध्वलोकों को प्रदान करने वाली, श्रुति पुराणादि शास्त्रों द्वारा जिसका प्रतिपादन किया जाता है, सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण को जो अत्यन्त प्रिय है । जिसकी परिचर्या करने पर साधक के समस्त पापों का शमन कर देती है एवं सदा प्रसन्न रहती है और इच्छित सम्पदा-सिद्धिवैभव एवं मनोरथों को पूर्ण करने वाली परम सुन्दर स्वरूपा भगवान् श्रीकृष्ण के रसपूर्ण आनन्द प्रदायक व्रजधेनु श्रीगोमाता का हम अपने हृदय में ध्यान चिन्तन करते हैं ॥२॥

दूध[१]-दही[२]-घी[३]-मूत्र[४]-गोबर[५] ये पञ्चप्रकार रूप पञ्चगव्य है इनको प्रदान करने वाली तथा मानव के हृदय में सर्वदा शान्ति प्रदायक परमानन्दकन्द गोविन्द भगवान् श्रीकृष्ण की दिव्य वंशी की मधुर ध्वनि सुनकर आनन्द में विभोर एवं सर्वदा परम पूजनीय है । आनन्द की वृष्टि की नवीन सृष्टि करने वाली नितान्त उपासनीय श्रीकृष्ण भगवान् के दिव्यानन्द को देने में उत्सुक व्रजधेनुरूप श्रीगोमाता का प्रतिपल मङ्गलमय ध्यान धरते हैं ॥३॥

(४)

दुग्धाऽमृतप्रचुरदानपरां सुराच्र्यां
दुर्वाङ्कुराऽशनसुतृप्तसुमोदपूर्णाम् ।
सद्भिर्बुधैर्हरिपदाब्जरतैः सुगीतां
ध्यायेम कृष्णरसदां व्रजधेनुरूपाम् ॥

(५)

गन्धर्व-किन्नरगणैरुपगीयमानां
सोल्लासपूर्वकविधीश-सुरेशवन्द्याम् ।
अध्यात्मदर्शनगिरा सततं समीड्यां
ध्यायेम कृष्णरसदां व्रजधेनुरूपाम् ॥

(६)

आज्याऽमृताऽभिनवशौर्यसुकान्तिदात्रीं
श्रेयस्करीं शरणभक्तशरण्यरूपाम् ।
राधामुकुन्दयुगलाङ्घ्रिसुभक्तिदाञ्च
ध्यायेम कृष्णरसदां व्रजधेनुरूपाम् ॥

दूधरूपी दिव्य अमृत को प्रचुर मात्रा में देने वाली देवों द्वारा परिपूजित, हरित कोमल कोमल दुर्वा (दूब) के अंकुरों का आहार करके परम तृप्त होकर अतीव आनन्द से परिपूर्ण तथा श्रीराधामाधव प्रभु के चरणारविन्दों में अनुरक्त उत्तमोत्तम सन्तजन एवं विद्वज्जनों द्वारा सम्यक् प्रकार से जिसकी पावन महिमा का गान होता है ऐसी श्रीकृष्णरस अर्थात् श्रीहरि के दिव्यानन्द को देने वाली व्रजधेनु गोमाता का ध्यान प्रतिपल करते हैं ॥४॥

गन्धर्व-किन्नरों के समूह द्वारा जिसकी महिमा का गान होता है, ब्रह्मा-शंकर-इन्द्रादि देवों से परम उल्लास अर्थात् असीम आनन्द उत्साह के साथ सदा अभिवन्दित है और अध्यात्म दर्शन शास्त्रों की दिव्य वाणी द्वारा जिसका नित्य स्तुति गायन होता हैं ऐसी श्रीकृष्णानन्दरसदायिका व्रजधेनुरूप श्रीगोमाता का ध्यान करते हैं ॥५॥

अपने अमृत तुल्य घृत से नवीन बल और कान्ति को देने वाली कल्याणकारक, शरणागत भक्तों के लिये जो परम शरण्य रूप है । वृन्दावननवनिकुञ्जविहारी भगवान् श्रीराधा-मुकुन्द के युगल चरणारविन्दों की पराभक्ति प्रदाता श्रीकृष्ण रस भक्ति को देने वाली व्रजधेनु गोमाता का समग्रविधा ध्यान करते हैं ॥६॥

(७)

धर्मार्थकामशुभमोक्षसुदानशीलां
सेवापरायणसुसाधकभक्तिदृष्टिम् ।
गोपालपालितसुपुष्टमहीयसीञ्च
ध्यायेम कृष्णरसदां व्रजधेनुरूपाम् ॥

(८)

श्रीकृष्णहस्तकमलाङ्गुलिचालनेन
रोमाञ्चितां व्रजवने नितरां प्रसन्नाम् ।
वत्सार्थदुग्धरसदानकरीमथाऽहो
ध्यायेम कृष्णरसदां व्रजधेनुरूपाम् ॥

(९)

गोपाङ्गनानवलगोष्ठसमूहरूपां
नानास्वरूपपरिशोभितमञ्जुगात्राम् ।
सौरीप्रतीरपुलिने परिगम्यमानां
ध्यायेम कृष्णरसदां व्रजधेनुरूपाम् ॥

धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष इन पुरुषार्थ चतुष्टय की परम प्रदायक और सेवा परायण उत्तम साधकों द्वारा की जाने वाली विमल भक्ति की और जिसका समग्रविधा पूर्ण ध्यान है । भगवान् श्रीकृष्ण जो गोपाल रूप से परम सुशोभित हैं उनके द्वारा विविध प्रकार से पालित-सम्पोषित होने से जो परिपुष्ट एवं महत्वशालिनी है ऐसी श्रीकृष्णरससुधा को देने वाली व्रजधेनु स्वरूप श्रीगोमाता का मनसा, वाचा, कर्मणा से ध्यान करते हैं ॥७॥

व्रजके मनोहर वन कुञ्जों में सच्चिदानन्दकन्द रसपरब्रह्म भगवान् श्रीकृष्ण संस्पर्श से जो अत्यन्त रोमाञ्चित एवं परम प्रसन्न है तथा अपने वत्स (बछड़े) को दूध पान कराने हेतु अति उत्सुक है, कितना आश्चर्यावह यह दर्शनीय अवसर है ऐसी श्रीकृष्णचरणाम्बुज रसमयी अनुरागमयी पराभक्ति को देने वाली व्रजधेनु श्रीगोमाता का अविरल ध्यान करते हैं ॥८॥

व्रज गोपीजनों की नव-नव गोशालाओं में समूह रूप से सुशोभित एवं श्वेत-पीत-श्याम-अरुण-चित्र-विचित्र स्वरूप में दर्शनीय सुन्दर सुडोल शरीर वाली श्रीयमुना के तटीय पुलिन पर परिभ्रमणशील श्रीकृष्ण रस प्रदायिनी व्रजधेनु गोमाता का मङ्गलमय ध्यान करते हैं ॥९॥

(१०)

जम्बू-कदम्बतलधूलिविभूषिताङ्गां
कीराङ्गनानिकरमञ्जुनिनादहृद्याम् ।
स्वच्छाऽम्बुपानहितयामुनकूलफुल्लां
ध्यायेम कृष्णरसदां व्रजधेनुरूपाम् ॥

(११)

गोविन्ददर्शनमहातुरचारुचित्तां
वृन्दावने व्रजवने सततं व्रजन्तीम् ।
आह्लादकामसुभगां प्रियदुग्धपूर्णां
ध्यायेम कृष्णरसदां व्रजधेनुरूपाम् ॥

(१२)

नानामनोरथकरीं व्रजवल्लभाय
रासेशदर्शनपरां नवदुग्धधाराम् ।
मार्गे व्रजे कलितकुञ्जवने वहन्तीं
ध्यायेम कृष्णरसदां व्रजधेनुरूपाम् ॥

जामुन-कदम्बादि तरुवरों के निम्न भाग में अतिकोमल व्रजधूलि से धूसरित जिनका सुभग शरीर है । शुक - शुकी प्रभृति खगगणों के समूह के मधुर कलरव सुनकर अतिशय आनन्दित हो रहा अन्तर्हृदय जिनका एवं निर्मल मधुर जल पान हेतु श्रीयमुना के सुरम्य तट पर अवस्थित परमप्रफुल्लित श्रीकृष्णरसभक्ति प्रदान करने वाली व्रजधेनु श्रीगोमाता उसका सर्वात्मना ध्यान करते हैं ॥१०॥

व्रजजीवनसर्वस्व भगवान् गोविन्द श्रीकृष्ण के दर्शनों के लिये अतिशय आतुर जिनका सुन्दर चित्त है, व्रज के रमणीय वनोपवनों एवं श्रीवृन्दावन की अति मनोहरी धरा पर विचरण करती हुई सर्वदा जिसने आनन्द प्राप्त कर जो सुन्दर स्वरूप में स्थित है और परम मधुर दूध से परिपूर्ण श्रीकृष्णरसानुराग प्रदायक व्रजधेनु श्रीगोमाता का प्रतिपल ध्यान करते हैं ॥११॥

भगवान् श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण को अपने पयःपान आदि विविध मनोरथ करने वाली और उन्हीं परात्पर परब्रह्म सर्वेश्वर रासेश्वर श्रीकृष्ण भगवान् दिव्यातिदिव्य मधुरातिमधुर दर्शनों के उत्कण्ठित होते हुए उन्हीं के लिये व्रज के मञ्जुल मार्गों शुभ्र स्वच्छ वीथियों में मञ्जु कुञ्जों के सुरम्य वनों में सद्यः सुन्दर दुग्ध धारा को धारण करती हुई श्रीकृष्णरसरति को देने वाली व्रजधेनु का सर्वतोभावेन ध्यान करते हैं ॥१२॥

(१३)

गोवत्सगोपनिकरैरतिशोभमानां
गीतां पुराणवचनैर्निगमागमैश्च ।
वन्दारुवृन्दकथनैः कमनीयकान्तिं
ध्यायेम कृष्णरसदां व्रजधेनुरूपाम् ॥

(१४)

आनन्दधामरुचिरां बलरामपूज्यां
गोवर्धने विविधपादपकुञ्जरम्ये ।
वृन्दावनेश हरिणा परिसेव्यमानां
ध्यायेम कृष्णरसदां व्रजधेनुरूपाम् ॥

(१५)

संसारराष्ट्रवरभारतवर्षभूमौ
स्वच्छन्दचारुतृणपुञ्जमहोचरन्तीम् ।
नित्यं प्रसन्नहृदयां प्रतिगोपसेव्यां
ध्यायेम कृष्णरसदां व्रजधेनुरूपाम् ॥

अपने सुन्दर वत्स (बछड़ों) एवं गोपालक व्रजगोप समूह से अत्यन्त शोभायमान, समस्त निगमागम शास्त्र एवं समग्र पुराणादि शास्त्र के दिव्य वचनों से जिसकी महिमा का सुन्दर वर्णन होता है । वन्दीजन अपने गम्भीर मधुर वचनों से गोमाता की मनोरम कान्ति का हृदयाकर्षक गान करते हैं । ऐसी श्रीकृष्ण-रसानन्द को प्रदान करने वाली व्रजधेनु स्वरूप गोयूथ का ध्यान करते हैं ॥१३॥

आनन्द की दिव्य धाम रूप परम मनोहर एवं रोहिणीनन्दन नयनाभिराम हलधर शेषावतार भगवान् श्रीबलरामजी के द्वारा सदा परिपूज्य और नानाविध लताद्रुमावलियों के ललित कुञ्जों से अति रमणीय गिरिराज गोवर्धन में वृन्दावनाधीश रसेश्वर भगवान् श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण के द्वारा परिसेवित श्रीकृष्णरस-प्रदायिनी व्रजधेनु रूप गो समूह का ध्यान करते हैं ॥१४॥

विश्व के समस्त राष्ट्रों में परम मूर्द्धन्य सर्वश्रेष्ठ भारतवर्ष की सुपावन वसुधा पर स्वच्छन्द रूप से सुन्दर - सुन्दर तृणराशि को प्राप्त करती हुई जो अति विस्मयकारी सुखानुभूति करती है जिससे नित्य निरन्तर जो प्रसन्नहृदया एवं प्रत्येक गोपयूथ से परिसेव्य ऐसी श्रीकृष्णरसदा व्रजधेनुरूप श्रीगोमाता का ध्यान करते हैं ॥१५॥

(१६)

आत्मीयपुच्छशरणाऽद्यनिरासकर्त्री-
मित्थं समग्रमनुजैः परिसेवनीयाम् ।
गोमातरं भवनिधिं भवभीतिहन्त्रीं
ध्यायेम कृष्णरसदां व्रजधेनुरूपाम् ॥

(१७)

गोषोडशी पुण्यरूपा वरदा लोकपावनी ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता ॥

*

अपने सुन्दर पुच्छ भाग से जो सेवा परायण शरणागत श्रद्धालु भक्त हैं उनके समस्त जन्मान्तरों के पापपुञ्जों का निवारण करने में परम समर्थ ऐसी सम्पूर्ण मानवों द्वारा जो सर्वदा प्रपूज्य है भवाटवी का जो भीषण भय है उसका परिहार करने वाली और इस जगत् की सर्वाधिक श्रेष्ठ परमनिधि गोमाता जो श्रीकृष्णरस की सुधा धारा में निमग्न करने वाली व्रज की सर्वस्व सर्वमूर्द्धन्य धेनु स्वरूप इस श्रीगोमाता का प्रतिपल ध्यान करते हैं ॥१६॥

अभिलषित श्रेष्ठ वर अर्थात् मनोरथ को देने वाली समस्त भुवन को पवित्र करने में अग्रगण्य पुण्य स्वरूप श्रीगोमाता जिसके स्वरूप माहात्म्य द्योतक यह षोडशी स्वयं श्रीगोमाता ने अपनी पावन प्ररणा से हमें निमित्त बनाकर इसकी रचना करायी गई जो अपने स्वयं एवं साधक श्रद्धालु भागवज्जनों के लिये केनापि रूपेण उपादेय रहेगी तो अतिशय श्रेष्ठ है ॥१७॥

*

❋ गोमाता का उज्ज्वल स्वरूप ❋

(१)

गोमाता महिमामयी, पावन मङ्गल रूप ।
सकल शास्त्र वर्णन करहि, 'शरण' असीम अनूप ॥

(२)

गौ के समस्त अङ्ग में, कोटि - देव अधिवास ।
ऋषिवर मुनिजन भाव से, सेवा 'शरण' उपास ॥

(३)

गो - सेवा अभिरत सदा, जो भावुक सश्रद्ध ।
सकल मनोरथ पूर्ण हो, 'शरण' प्रणति करबद्ध ॥

(४)

गोमाता की जय सदा, बोलो भाव विभोर ।
निश्चय जीवन सफल है, 'शरण' मिलै चितचोर ॥

(५)

जिसके घर में धेनु है, सेवा श्रीघनश्याम ।
वही भक्त अभिवन्द्य है, 'शरण' रहहि निष्काम ॥

(६)

जिस राष्ट्र की सुसम्पदा, गोमाता - गोपाल ।
वही सुमंगल रूप है, 'शरण' सदैव निहाल ॥

(७)

परम शुद्ध गोग्रास का, सदा रहै हिय ध्यान ।
पञ्चगव्य प्राशन करै, 'शरण' कर्तव्य महान ॥

(८)

पञ्चामृत का पान नित, जिससे सदा निरोग ।
दिव्य शुद्ध रस रूप है, 'शरण' सुभग सुयोग ॥

(६)

गोमूत्र के सेवन से, उदर रोग परिहार ।
दधि - घृत - माखन - दूध से, 'शरण' शक्ति सञ्चार ।

(१०)

गौ की सुभग कृपा तभी, सेवा हो निष्काम ।
सदा सर्वदा मङ्गल हो, 'शरण' मिलहि हरि धाम ॥

(११)

गो - अभिवन्दन नित करै, गोरक्षण अवधान ।
गोसेवा ही परम धर्म, 'शरण' रखै हिय ध्यान ॥

(१२)

जब भी मारग में चलै, गोदर्शन हो जाय ।
तब निज दक्षिण अङ्ग ओर, 'शरण' चलहि शिर नाय ॥

(१३)

गो सर्वथा रक्षणीय, वह अवध्य सदाहि ।
उसका पालन सम्पोषण, 'शरण' श्रेष्ठ वरदा हि ॥

(१४)

प्रभात वेला ऊठ कर, गोपद करैं प्रणाम ।
गो रज शिर पर धार कर, 'शरण' जपै हरिनाम ॥

(१५)

गोधन भारतवर्ष में, प्रपूज्य है नितराम ।
वहीं आज वध हो रहा, 'शरण' कष्ट अविराम ।

(१६)

वाणी में सामर्थ्य नहि, गो यश अवर्णनीय ।
सर्वेश्वर श्रीकृष्ण प्रभु, सेवा 'शरण' वरीय ॥

(१७)

धर्मप्राण भारत में, होता घोर अनर्थ ।
गोवध प्रतिदिन विपुल है, 'शरण' कथन असमर्थ ॥

(१८)

सर्वेश्वर ! श्रीकृष्ण प्रभो !, कृपानाथ ! गोपाल ! ।
त्वरित प्रकट हो हे हरे !, 'शरण' विश्व प्रतिपाल ! ॥

(१९)

मुहुर्मुहुः है प्रार्थना, श्रीहरिचरणाम्भोज ।
शुभ दर्शन हो अवनितल, 'शरण' प्रणति हर रोज ॥

(२०)

दया हीन नर असुर है, महा अधम अतिक्रूर ।
गोवध अभिरत सतत है, 'शरण' दण्ड्य भरपूर ॥

(२१)

गोमाता है जगत की, उसकी जय जय बोल ।
प्रतिपल वन्दन करत हैं, 'शरण' परम अनमोल ॥

(२२)

गोमाता इस जगत की, रक्षा हित पय दान ।
करती है अति मुदित मन, 'शरण' करत श्रुति गान ॥

(२३)

चरती है अति शुष्क तृष्ण, देती अमृत शुद्ध ।
ऐसी माता गाय से, 'शरण' रोग अवरुद्ध ॥

(२४)

ऋषिवर मुनिजन देवजन, करत नित्य प्रणाम ।
गोयश वरणत विप्रजन, 'शरण' प्रणत व्रजवाम ॥

(२५)

कोटि गोवृन्द पृष्ठ में, व्रजत व्रजेश्वर श्याम ।
वृन्दावन यमुना पुलिन, 'शरण' संग बलराम ॥

(२६)

व्रज शोभा अति दिव्य है, विचरत धेनु अपार ।
लता-तरुन की डार पर, खग कुल 'शरण' निहार ॥

(२७)

नगर-ग्राम अरु व्रज विपिन, जहाँ विलोकत गाय ।
श्रीयमुनातट लतनि में, 'शरण' जगत की माय ॥

(२८)

जो जन गोरज शिर धरहि, सकल पाप संहार ।
पावै निश्चय सम्पदा, 'शरण' भक्तिरस धार ॥

(२९)

गौ पूजै सुख सम्पदा, आधि-व्याधि सब जाय ।
प्रमुदित हों गोपाल भी, 'शरण' नित्य गुण गाय ॥

(३०)

गोशाला नित जाय कर, दरश करहि सब गाय ।
समस्त दिन अति सुखद हो, 'शरण' शान्ति मिल जाय ॥

(३१)

योगी यतिवर सन्तजन, पूजत हरिप्रिय धेनु ।
उनका जीवन श्रेष्ठतम, 'शरण' बजत हरि वेनु ॥

(३२)

गौ का रूप अनेकविध, श्याम-श्वेत-अरुणाभ ।
चितकबरी अरु पीत है, 'शरण' दरश शुभ लाभ ॥

(३३)

व्रजगोपीजन गाय हित, विविध करत सदुपाय ।
गोदोहन कर दुग्ध लै, 'शरण' भेट हरि पाय ॥

(३४)

इस वसुधा पर विविध जीव, उनमें श्रेष्ठ महान ।
गोमाता परिपूज्य है, 'शरण' योग्य सम्मान ॥

(३५)

गोमाता बिन सकल विधि, धर्म कर्म शुभ कार्य ।
नहि सम्पादित हो कभी, 'शरण' गाय अनिवार्य ॥३५॥

(३६)

वशिष्ठ मुनिवर प्रिय धेनु, कामधेनु शुभ दर्श ।
महिमा वर्णन है कठिन, 'शरण' दरश अभितर्ष ॥

(३७)

परशुराम ने धेनु हित, सहस्रार्जुन संहार ।
किया विश्व विख्यात है, 'शरण' राम-अवतार ॥

(३८)

दिलीप राजा प्रमुख है, गोरक्षा में सिद्ध ।
निज प्राणों का मोह नहि, 'शरण' परम प्रसिद्ध ॥

(३९)

गोरक्षा हित करपात्री, धीर धर्मसम्राट ।
पुरी शंकराचार्य के, 'शरण' सुकार्य विराट ॥

(४०)

सुप्रसिद्ध प्रभुदत्तजी, ब्रह्मचारि विख्यात ।
गो हित नानारूप से, 'शरण' लगै दिन रात ॥

(४१)

भारत जनता स्वयं भी, किया सत्याग्रह पूर्ण ।
गोरक्षा में निज तन को, 'शरण' समर्पण तूर्ण ॥

(४२)

समस्त सिद्धि की मूल है, गोसेवा चितधार ।
सकल अमंगल दूर हों, 'शरण' भजो श्रुतिसार ॥

(४३)

शुद्ध भाव से गौ सेवा, करैं परम अनिवार्य ।
समस्त शास्त्र के शुभ बचन, 'शरण' हृदय अवधार्य ॥

(४४)

साश्चर्य है संताप हिय, गोवध भारत रोज ।
स्वतन्त्रता का अर्थ क्या ? 'शरण' कथन संकोच ॥

(४५)

वन-वन गोधन दुखी तन, अवलोकत रखवाल ।
क्रूर वधिक ले जा रहे, 'शरण' दुष्ट अघपाल ॥

(४६)

कृपाधाम प्रभु कृष्ण हैं, करहि कृपा प्रभु शीघ्र ।
गोमाता अतिकष्ट में, 'शरण' विपद अति तीव्र ॥

(४७)

गो-गोपी-गोपाल कृष्ण, गोप सखा-गिरिराज ।
व्रज-यमुना-वृन्दाविपिन, 'शरण' वेणु रव गाज ॥

(४८)

दौड़ी-दौड़ी आवतीं, सुन मुरली का नाद ।
गाय गोप गोपी सभी, 'शरण' हृदय आह्लाद ॥

(४९)

मात यशोदा गो दोहन, करती यमुना तीर ।
कृष्ण चन्द्र बलराम भी, 'शरण' समीहत क्षीर ॥

(५०)

चलो चलैं ब्रजधाम में, दर्शन गो गोपाल ।
अविचल पय धारा वहै, 'शरण' कदम्ब-तमाल ॥

(५१)

विलम्ब करना हानिकर, तुरत चलो श्रीधाम ।
दर्शन गो-वन-सम्पदा, 'शरण' परम विश्राम ॥

(५२)

पादप छाया सुखद है, दुर्वाङ्कुर हरिताभ ।
मुदित चरत गोवृन्द ब्रज, 'शरण' दिव्य हरि आभ ॥

(५३)

लतिका-तरुवर कुसुम कलि, गुञ्जत भृङ्ग समूह ।
गोमाता अति उल्लसित, 'शरण' गोपगण व्यूह ॥

(५४)

मयूर-मर्कट-गोपगण, संग कृषण बलराम ।
सुन्दर क्रीडत धेनुवत्स, 'शरण' दरश अभिराम ॥

(५५)

लता तरुन की कुञ्ज में, नाचत मत्त मयूर ।
गाय चरावत कृष्ण लखि, 'शरण' मुदित भरपूर ॥

(५६)

कोकिल कूजत कुञ्ज में, वेणु बजावत श्याम ।
धावत आवत मुदित मन, 'शरण' धेनु बलराम ॥

(५७)

अतिशय सुन्दर गोधूलि,-वेला शुभ रमनीय ।
कोटि-कोटि गोवृन्द संग, 'शरण' कृष्ण कमनीय ॥

(५८)

गावो गावो गाय की, महिमा दिव्य अपार ।
जीवन सुखमय अवश्य हो, 'शरण' कृपा संचार ॥

(५९)

भारत वसुधा सम्पदा, गोमाता जय बोल ।
जगन्नियन्ता कृष्ण भी, 'शरण' मुदित रस घोल ॥

(६०)

गो-गोविन्द-गोपाल-कृष्ण,-गोपवृन्द-बलराम ।
क्रीडत पुनि-पुनि उल्लसित, 'शरण' सदा निष्काम ॥

(६१)

ध्यान गान करते रहै, सेवा अथ सम्मान ।
गोमाता रक्षा करैं, 'शरण' पूर्ण सुख भान ॥

(६२)

राधासर्वेश्वरी प्रिया, गो पूजत अविराम ।
सखी यूथ नित संग है, 'शरण' व्रजेश्वर श्याम ॥

(६३)

श्रीराधा कुञ्जेश्वरी, सर्वेश्वर श्रीकृष्ण ।
गोयश वर्णत नित्य हैं, 'शरण' अकाम-अतृष्ण ॥

(१)

गोप-अष्टमी पूजन करिये ।
सुन्दर पावन सुखद गोधूलि, गो पूजन कर भवनिधि तरिये ॥
श्रीहरि गोविन्द प्रमुदित हो मन, वितरत रस की धारा वरिये ।
अनुपम मंगल यह अवसर है, विद्या शुभ दिन आरम्भ करिये ॥
श्रीगोमाता दर्शन करि करि, जीवन सार्थक रस संचरिये ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, आनद अनुपम हिय अवधरिये ॥

(२)

गोधन पावन परम धन मानो ।
गो सम नाही सकल भुवन में, आन श्रेष्ठ धन निश्चय जानो ॥
सकल शास्त्र अरु मुनिजन निगदत, गोधन महिमा शुभ पहचानो ।
कार्तिक सुद की पावन परवा, गो-गोवर्धन पूजन ठानो ॥
देव-नर-किन्नर-कुशल गुणीजन, मुदमन अनुपम सुयश बखानो ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, गोमाता जय मंगल मानो ॥

(३)

कामधेनु यह श्रीगोमाता ।
शरणागत हो सेवा अभिरत, मन वांछित फल तुरत हि पाता ॥
गो-तन अगणित सकल सुरादिक, निवसत शंकर-विष्णु-विधाता
जाकी महिमा गावत प्रतिपल, योगि-यतीश्वर-ऋषिवर त्राता ॥
दृष्टि मात्र से करती मंगल, अमृत सम पय देती माता ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, भावुक तन-मन अति हरषाता ॥

(४)

जय जय जय हो गो-यश गावो ।
नर जीवन नहि पुनि पुनि मिलता, पाकर यह तन गौ को ध्यावो ॥

गोप-अष्टमी मंगल गावो, निशिदिन सेवा कर हरषावो ।
सहज कृपा हो श्रीगोमाता, गो सेवा हित धन वरषावो ॥
यही साधना यही परम व्रत, मन प्रमुदित कर गो-यश गावो ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, श्रीसर्वेश्वर हृदय बसावो ॥

(५)

श्रीगोमाता जय जय बोलो ।
दूध-दही-घृत-माखन देती, पाकर उसको निहाल होलो ॥
तृणाहार कर अमृत वर्षा, करती प्रतिदिन आँखें खोलो ।
गो सम प्राणी इस वसुधा पर, कहीं न जग में कहीं टटोलो ॥
श्रीहरि माधव गो सेवा रत, गो यश अनुपम परम अमोलो ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, यह जग माता निज हिय तोलो ॥

(६)

हे व्रजवल्लभ गाय बचावो ।
गोमाता पर संकट भारी, रक्षण हित अवतार धरावो ॥
कृपा करो हे कृष्ण ! मुरारे !, हे नदनन्दन ! नहि बिसरावो ।
गोवध कारण भारत-वसुधा, परम दुखी है चक्र चलावो ॥
दुरित जनों का हनन शीघ्र हो, यह संकट अब तुरत हटावो ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, पुनि पुनि वन्दन झटपट आवो ॥

(७)

गो-गोवर्धन हम गुण गावैं ।
वीणा-वंशी और मजीरा, मधुर मनोहर मृदंग बजावैं ॥
कलित कंठ से सुन्दर गाकर, गो-गोवर्धन चित्त बसावैं ।
जन्म-जन्म के पातक नशते, जीवन सुखमय तुरत बनावैं ॥
यह अवसर अति दुर्लभतम है, पाकर इसको हिय हरषावैं ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, जय जय बोलो सब सरसावैं ॥

(८)

गाय चरावत कृष्ण कन्हैया ।
विविध लता-तरु-कुंज-पुंज में, गाय चरावत सुन्दर छैया ॥
ग्वाल-बाल प्रिय संग सखा हैं, कृष्णचन्द्र श्रीवेणु बजैया ।
अवलोकत है ब्रह्मा-शंकर, और पुरन्दर नमन करैया ॥
यह शोभा शुभ दर्शन करते, श्रीनारदमुनि वीन धरैया ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, पल-पल ध्यावें चित्त बसैया ॥

(९)

गाय हमारी परम सम्पदा ।
इसकी रक्षा परम धर्म है, कभी न आवे कठिन आपदा ॥
परम सनातन भारत संस्कृति, गोमाता है मुख्य सर्वदा ।
यही जगत की अधर शिला है, अतिशय पावन पय सुधा प्रदा ॥
सदा नमन हो गो-पद मंगल, मुदित निवारण करहि नित्यदा ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, गावो गावो गो-यश रसदा ॥

(१०)

गाय पुच्छ है स्वर्ग प्रदायक ।
जो जन पावन भावनिष्ठ हो, गोदान करहि वह अतिलायक ॥
सदा स्वर्ग में रस अवगाहत, पुनि-पुनि बनता हरिरस गायक ।
नाना वैभव पाकर सुख का, अनुभव करता होत सुनायक ॥
ऐसी माता मंगलकारी, सबकी पालक जगत विधायक ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, दधि-पय दायक दीन सहायक ॥

(११)

गो शुभ दर्शन नियमित आवै ।
सकल मुनीश्वर और सुधीजन, गो-दर्शन हित प्रातहि धावै ॥

प्रभात वेला है अति सुन्दर, वन्दन करि-करि हिय सुख पावै ।
गो दर्शन का मधुर सुफल है, जनम-जनम के दुरित नशावै ।।
गो रज उडि-उडि तन पर परि है, सकल जगत भय तुरत विलावै ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, जीवन सार्थक चित हरषावै ।।

(१२)

व्रज की शोभा परम निराली ।
जहाँ सतत प्रिय धेनु दरश है, वर्षहि वर्षा दूध रसाली ।।
भारत योद्धा समर कुशल हैं, पीवत प्रिय पय हैं बलशाली ।
बालक-वनिता-वृद्ध-युवकजन, जय जय बोलत श्रीवनमाली ।।
सुन्दर पावत दूध-मलाई, विविध मिठाई भर-भर थाली ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, गाय कृपा हत सब जंजाली ।।

(१३)

गो बछड़े भी फुदकत डोलै ।
श्वेत-पीत अरु ललित अरुण हैं, इत उत धावत सुन्दर बोलै ।।
मात- - दूध प्रिय पीवत कूदत, मंजुल दर्शन परम अमोलै ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, प्रभु वंशी सुन श्रुतिपुट खोलै ।।

(१४)

गोमूत्र गोमय अति शुभकारी ।
विविध व्याधियाँ तुरत पलायन, करती निश्चय रस संचारी ।।
चर्मरोगहर उदरव्याधि में, परम श्रेष्ठ है अति उपकारी ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, सदा सुपावन गुणगण भारी ।।

*

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री श्रीजी महाराज

द्वारा विरचित--

✻ ग्रन्थमाला ✻

	प्रकाशित	श्लोक सं.
१. श्रीनिम्बार्क भगवान् कृत प्रातः स्वतवराज पर (युग्मतत्त्व प्रकाशिका) नामक संस्कृत व्याख्या	,,	
२. श्रीयुगलगीतिशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	११८
३. उपदेश-दर्शन (हिन्दी-गद्यात्मक)	,,	
४. श्रीसर्वेश्वर-सुधा-बिन्दु (पद सं. १३२)	,,	
५. श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	३६५
६. श्रीराधामाधवशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१०५
७. श्रीनिकुञ्ज-सौरभम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	५८
८. हिन्दु संघटन (हिन्दी-गद्यात्मक)	,,	
९. भारत-भारती-वैभवम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१३५
१०. श्रीयुगलस्तवविंशतिः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१८६
११. श्रीजानकीवल्लभस्तवः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	४०
१२. श्रीहनुमन्महिमाष्टकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	२२
१३. श्रीनिम्बार्कगोपीजनवल्लभाष्टकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१५
१४. भारत-कल्पतरु (पद सं० १४६)	,,	
१५. श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	६५
१६. विवेक-वल्ली (पद सं० ४१६)	,,	
१७. नवनीतसुधा (संस्कृत-गद्यात्मक)	,,	
१८. श्रीसर्वेश्वरशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१०८
१९. श्रीराधाशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१०३

	प्रकाशित	श्लोक सं.
२०. श्रीनिम्बार्कचरितम् (संस्कृत-गद्यात्मक)	,,	
२१. श्रीवृन्दावनसौरभम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	६०
२२. श्रीराधासर्वेश्वरमंजरी (पद सं. ६४-दोहा सं. ६२)	,,	
२३. श्रीमाधवप्रपन्नाष्टकम् (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) (पद सं० २०)	,,	१०
२४. छात्र-विवेक-दर्शन (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) (दोहा सं० २४१)	,,	
२५. भारत-वीर-गौरव (हिन्दी-पद्यात्मक दोहा सं. १८१)	,,	
२६. श्रीराधासर्वेश्वरालोकः (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) (दोहा सं० ३२)	,,	१७
२७. श्रीपरशुराम-स्तवावली (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) (दोहा सं० ४६, पद सं० ६)	,,	२७
२८. श्रीराधा-राधना (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) (पद सं० २८, दोहा सं० ५१)	,,	५६
२९. मन्त्रराजभावार्थ-दीपिका (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१८
३०. आचार्यपञ्चायतनस्तवनम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	३५
३१. श्रीराधामाधवरसविलास (दोहा सं० १०५३)	,,	
३२. गोशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक) (दोहा सं० ६३, पद सं० १४)	,,	१३५
३३. श्रीसीतारामस्तवादर्शः (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) (दोहा सं० ३१, पद सं० ६)	**अप्रकाशित**	३०
३४. श्रीमाधवशरणापत्तिस्तोत्रम्	,,	६३

कुल हिन्दी पद सं० २६२२ कुल श्लोक सं० १८०४
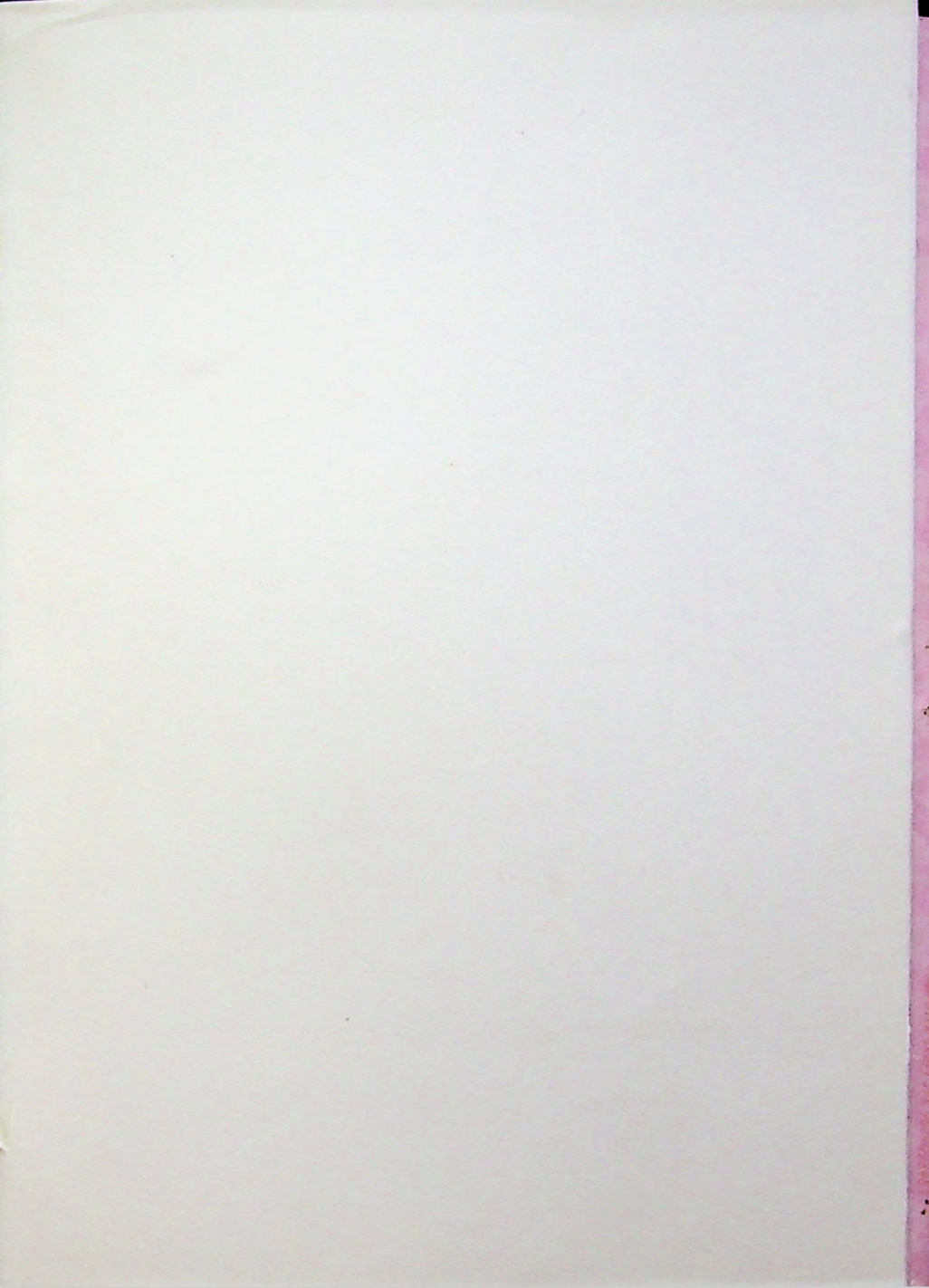
श्रीगोस्तवः

व्रजगोरसदायकदेवनुतां
व्रजकुञ्जवने सततं सुखदाम्।
व्रजजीवनकृष्णकराब्जततां
व्रजधेनुमहं नितरां प्रभजे ॥1॥

शरणागतजीवनदानपरां
व्रजगोपकदम्बसुसेव्यतमाम्।
सुरवृन्द-मुनीन्द्रगिरोच्चरितां
व्रजधेनुमहं नितरां प्रभजे ॥2॥

अथभारतवर्षधराप्रथितां
रमणीयवने सघने सुभगाम्।
भवरोगहरां वरदामभितो
व्रजधेनुमहं नितरां प्रभजे ॥3॥

निगमागमशास्त्रवचोभिरहो
प्रतिपादितदिव्यगुणैरनिशम्।
कलिकल्मषपुञ्जनिरासकरीं
व्रजधेनुमहं नितरां प्रभजे ॥4॥

पुण्यदो गोस्तवश्चारु गोयशः सम्प्रकाशकः।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितः ॥5॥